राजनीतिक तरकस

RNI NO.: DELHIN/2016/70363

देश का सबसे तेज साप्ताहिक

समय से संवाद

मूल्य : ₹5

■ वर्ष : 07 ■ अंक : 05 ■ पृष्ठ : 08 ■ नई दिल्ली

■ बुधवार ■ 28 सितम्बर, 2022 (28 सितम्बर से 04 अक्टूबर 2022)

भारत की धरती पर लौटे चीते

पीएम मोदी बोले- 'दशकों पहले जैव-विविधता की टूट गई थी कड़ी'

नई दिल्ली/ संवाददाता। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कूनो नेशनल पार्क में नामीबिया से आए चीतों को छोड़ने के बाद देश को संबोधित किया। उन्होंने कहा, दशकों पहले जैव-विविधता की सदियों पुरानी जो कड़ी टूट गई थी, आज हमें उसे फिर से जोड़ने का मौका मिला है। पीएम ने कहा, आज भारत की धरती पर चीता लौट आए हैं और इन चीतों के साथ ही भारत की प्रकृतिप्रेमी चेतना भी पूरी शक्ति से जागृत हो उठी है।

पीएम ने कहा, मैं हमारे मित्र देश नामीबिया और वहां की सरकार का भी धन्यवाद करता हूं, जिनके सहयोग से दशकों बाद चीते भारत की धरती पर वापस लौटे हैं। उन्होंने कहा, यह दुर्भाग्य रहा कि हमने 1952 में चीतों को देश से विलुप्त तो घोषित कर दिया, लेकिन उनके पुनर्वास के लिए दशकों तक कोई सार्थक प्रयास नहीं हुआ।

प्रधानमंत्री ने कहा, आज आजादी के अमृतकाल में अब देश नई ऊर्जा के साथ चीतों के पुनर्वास के लिए जुट गया है। जब प्रकृति और पर्यावरण का संरक्षण होता है तो हमारा भविष्य भी सुरक्षित होता है।

एशियाई शेरों की संख्या में हुआ इजाफा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, हमारे यहां एशियाई शेरों की संख्या में भी बड़ा इजाफा हुआ है। आज गुजरात देश में एशियाई शेरों का बड़ा क्षेत्र बनकर उभरा है। इसके पीछे दशकों की मेहनत, शोध आधारित नीतियां और जन-भागीदारी की बड़ी भूमिका है। टाइगर्स की संख्या को दोगुना करने का जो लक्ष्य तय किया गया था उसे समय से पहले हासिल किया है। असम में एक समय एक सींग वाले गैंडों का अस्तित्व खतरे में पड़ने लगा था, लेकिन आज उनकी भी संख्या में वृद्धि हुई है। हाथियों की संख्या भी पिछले वर्षों में बढ़कर 30 हजार से ज्यादा हो गई है। पीएम ने कहा, देश के इन प्रयासों का प्रभाव आने वाली सदियों तक दिखेगा, और प्रगति के नए पथ प्रशस्त करेगा।

पीएफ़आईः 15 राज्यों में एक साथ पड़े छापे

एनआईए के मुताबिक देश के पंद्रह राज्यों में की गई छापेमारी के दौरान कुल 45 लोगों को गिरफ़्तार किया गया है। केरल से 19, तमिलनाडु से 11, कर्नाटक से 7, आंध्र प्रदेश से 4, राजस्थान से दो और तेलंगाना और उत्तर प्रदेश से एक-एक गिरफ़्तारी की गई है।

पीएफ़आई के महासचिव अनीस अहमद को भी गिरफ़्तार कर लिया गया है।

छापेमारी की ये कार्रवाइयां केरल, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, बिहार, मध्य प्रदेश और अन्य कई राज्यों में की गई हैं।

वहीं महाराष्ट्र एटीएस के एसपी संदीप खाडे ने समाचार एजेंसी एएनआई को बताया है कि नांदेड़ समेत अलग-अलग शहरों से पीएफ़आई के 20 कार्यकर्ताओं को हिरासत में लिया गया है।

इस छापेमारी के दौरान एनआईएए के अलावा राज्य के पुलिस बलों ने भी कुछ लोगों को हिरासत में लिया है।

पीएफ़आई के कार्यकर्ताओं ने एनआईए की छापेमारी के ख़िलाफ़ प्रदर्शन भी किए हैं।

एनआईए के छापों के बाद पीएफ़आई ने एक बयान जारी कर कहा है, पीएफ़आई की राष्ट्रीय कार्यकारिणी परिषद ने एनआईए और ईडी के देशव्यापी छापों और अपने राज्य और राष्ट्रीय स्तर के कार्यकर्ताओं और नेताओं की अन्यायपूर्ण गिरफ़्तारी की आलोचना की है।

पीएफ़आई ने कहा है, एनआईए के दावे सनसनीखेज हैं और इनका मक़सद आतंक का माहौल पैदा करना है।

पीएफ़आई ने कहा है कि वो इस तरह की कार्रवाई के आगे कभी भी समर्पण नहीं करेगी।

एनआईए और ईडी ने बुधवार रात और गुरुवार सुबह देश के अलग-अलग हिस्सों में स्थित पीएफ़आई के दफ़्तरों पर एक साथ छापेमारी की कार्रवाई की।

एनआईए ने अपने बयान में बताया है कि गिरफ़्तार कि गए लोगों पर 'आतंकवादी गतिविधियों का समर्थन' करने के आरोप हैं।

raj event

सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यंबके गौरी नारायणि नमोऽस्तुते।।

2022 नवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं

Services:
The type of Events we undertake, Product Launches, Live Concerts, Corporate Meetings, Seminars or Conferences, Fashion Shows, School Functions, College Festivals, Weddings, Sangeet

The type of activities:
Light & Sound hire, DJ Setup, Stage Set Up, Back Drop, Dance Troupe, Emcee, Few Celebrity Artists & Celebrity DJs, Audio Recording Facility

Ph.: 0987392199, 09899488009

राजनीतिक तरकस
देश का सबसे तेज साप्ताहिक
समय से संवाद
वर्ष : 07 , अंक : 05, नई दिल्ली, बुधवार, 28 अक्टूबर, 2022

योग्य खेवनहार की तलाश में काँग्रेस : हल्ला बोल रैली में राहु ल से आस

ज्ञानेन्द्र पाण्डेय

रविवार 4 सितंबर 2022 को दिल्ली के रामलीला मैदान में केंद्र की भाजपा सरकार के खिलाफ आयोजित हल्ला बोल रैली से देश की सबसे पुरानी पार्टी काँग्रेस एक बार फिर जन चर्चा के केंद्र में आ गई है । इस रैली को संबोधित करते हुए पार्टी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने जिस आक्रामकता के साथ केंद्र की भाजपा सरकार और पार्टी की नीतियों को आड़े हाथों लिया, उस पर बहुत कुछ कहा - सुना जा चुका है, इस पर बहुत कुछ कहने की गुंजाइश नहीं है लेकिन इस बहाने काँग्रेस के अतीत पर कहने की गुंजाइश जरूर बची रहती है। इस साल (2022) 28 दिसम्बर को इस पार्टी की स्थापना के 135 साल पूरे हो जाएंगे। देश की सबसे पुरानी पार्टी की कई विशेषताएं हैं। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि जिस तरह केंचुआ कटने पिटने के बाद हर परिस्थिति में जीने के लिए तैयार मिलता है वैसे ही काँग्रेस भी अपने जीवन में उतार - चढ़ाव के तमाम थपेड़े खाने के बाद भी खुद को नई परिस्थितियों का जीवटता से सामना करने के लिए तैयार कर लेती है। इस बार भी काँग्रेस कुछ ऐसी ही परिस्थितियों का सामना कर रही है। यह भी एक संयोग ही कहा जाएगा कि जिस दिन काँग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी पार्टी की रैली को संबोधित कर रहे थे उसी दिन पार्टी के इसी पूर्व अध्यक्ष को बहाल - बुरा कहते हुए पार्टी से बाहर गए जम्मू - कश्मीर के एक बड़े नेता गुलाम नबी आजाद ने लगभग उसी व्यक्त जम्मू की एक रैली में अपनी नई पार्टी बनाने की घोषणा की थी ।

गुलाम नबी आजाद जैसे नेता के पार्टी से अलग होकर नई पार्टी बनाए, ऐसा काँग्रेस में पहली बार भी नहीं हुआ है। इस पार्टी की एक खूबी इस रूप में भी देखी जा सकती है कि अपने 137 साल की आयु में यह पार्टी कितनी ही बार टूटी है और फिर से ताकतवर बन कर उभरी है। काँग्रेस से टूट कर अभी तक 60 से अधिक पार्टियां बन चुकी हैं इनमें ज्यादातर का आज कोई वजूद नहीं हैं लेकिन बाद के दौर में बनी ममता बनर्जी की तृणमूल काँग्रेस और शरद पवार की राष्ट्रवादी काँग्रेस पार्टी सरीखी कई पार्टियां अपने क्षेत्रीय रूप में आज भी वजूद में हैं।

याद हो कि ब्रिटिश साम्राज्य के दौर में जब लॉर्ड डफरिन इस देश के वायसराय थे तब अंग्रेजी शासन के विरोध में थियोसोफिकाल सोसाइटी के एक ही अंग्रेज सदस्य ए ओ 'म ने दो भारतीयों झ दादाभाई नौरोजी और दिनशा वाचा के साथ मिल कर इस पार्टी की स्थापना की थी । तब यह तय किया गया था कि 25 दिसम्बर 1885 को पूना में पार्टी का पहला अधिवेशन होगा लेकिन बाद में यह तय किया गया कि काँग्रेस का पहला अधिवेशन 28 से 31 दिसम्बर को बॉम्बे के गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कॉलेज में होगा । यही हुआ भी । काँग्रेस के इस पहले अधिवेशन में 72 लोगों ने भाग लिया था और इसकी अध्यक्षता व्योमेश चंद्र बनर्जी ने की थी । इन्हीं बनर्जी ने पार्टी की स्थापना के सात साल बाद 1892 में सम्पन्न पार्टी के इलाहाबाद अधिवेशन की अध्यक्षता भी की थी । तब से लेकर आज तक काँग्रेस के 87 अध्यक्ष बन चुके हैं और अंतरिम अध्यक्ष के रूप में सोनिया गांधी को काँग्रेस का 88 वां अध्यक्ष कहा जा सकता है । तमाम तरह की अटकलबाजियों के बीच काँग्रेस अध्यक्ष के चुनाव की तारीख का ऐलान भी हो चुका है । सब कुछ योजना के मुताबिक चलता रहा तो 18 अक्टूबर तक नए काँग्रेस अध्यक्ष का नाम घोषित हो जाएगा । इससे पहले 22 सितंबर को चुनाव की अधिकृत घोषणा के साथ ही उम्मीदवारों के नामांकन और नाम वापस लेने की प्रक्रिया शुरू हो जाएगी और नाम वापसी की तिथि के बाद एक से अधिक उम्मीदवार मैदान में बचे रहे तो 17 अक्टूबर को चुनाव होगा अन्यथा उसी दिन नए अध्यक्ष के नाम की घोषणा कर दी जाएगी ।

काँग्रेस अध्यक्ष बनने के लिए राहुल गांधी पर जबरदस्त दबाब है लेकिन वो 2019 के लोकसभा चुनाव में पार्टी की शर्मनाक पराजय के बाद पार्टी मुखिया के पद से अलग होने के मुद्दे को आज भी प्रासंगिक मानते हैं इसलिए इस पद के इच्छुक नहीं हैं । पार्टी में भी दो तरह के विचार हैं । एक तबका किसी भी तरह राहुल को अध्यक्ष बनाए जाने की वकालत करता है तो दूसरा तबका गांधी परिवार के किसी भी सदस्य को पार्टी के अध्यक्ष पद से दूर रखने का समर्थक है । बहरहाल चुनाव के बाद इस कुहासे से भी पर्दा उठ जाएगा । गुलाम नबी आजाद के अलग होकर नई पार्टी बनाने के फैसले से काँग्रेस को कितना

"काँग्रेस की एक खूबी इस रूप में भी देखी जा सकती है कि अपने 137 साल की आयु में यह पार्टी कितनी ही बार टूटी है और फिर से ताकतवर बन कर उभरी है। काँग्रेस से टूट कर अभी तक 60 से अधिक पार्टियां बन चुकी हैं इनमें ज्यादातर का आज कोई वजूद नहीं हैं लेकिन बाद के दौर में बनी ममता बनर्जी की तृणमूल काँग्रेस और शरद पवार की राष्ट्रवादी काँग्रेस पार्टी सरीखी कई पार्टियां अपने क्षेत्रीय रूप में आज भी वजूद में हैं।

नुकसान होगा और काँग्रेस की प्रतिद्वंदी पार्टियां इसका कितना फायदा उठा पायेंगी , इसका पता को कश्मीर के आगामी विधानसभा और 2024 के लोकसभा चुनाव परिणाम सामने आने के बाद लग ही जाएगा लेकिन इतना जरूर है कि काँग्रेस इसके बाद भी अपना वजूद बना कर रखेगी । यह बात इतिहास की घटनाओं से सिद्ध भी हो चुकी है । किसी भी राजनीतिक संगठन में टूटने झ जुडने की परिस्थितियाँ पार्टी नेताओं के बीच पनपने वाले वैचारिक मतभेद के चलते ही बनती हैं और यह सिलसिला बना ही रहता है . गौरतलब है कि आजादी के आंदोलन का संचालन करने के लिए 1885 में जिस काँग्रेस की स्थापना की गई थीउसी काँग्रेस में स्थापना के 22 साल बाद पहला विभाजन साल 1907 के सूरत अधिवेशन में हो गया था । इस विभाजन की वजह यह थी कि पार्टी का एक तबका आजादी के लिए अंग्रेजों के साथ आक्रामक रूप से लड़ने का पक्षधर था तो दूसरा धड़ अहिंसक असहयोग आंदोलन के जरिए आंदोलन करने का पक्षधर था । काँग्रेस के आक्रामक तेवर वाले तबके को गरम दल नाम दिया गया था और दूसरे तबके को नरम दल नाम दिया गया था । गरम डाल के काँग्रेस नेताओं में पंजाब केसरी लाला लाजपत राय , बाल गंगाधर तिलक और विपिन चंद्र पाल जैसे नेताओं के नाम थे और नरम दल के नेता थे झ महात्मा गांधी , जवाहरलाल नेहरू सरदार बल्लभ भाई पटेल , व्योमेश चंद्र बनर्जी और दादाभाई नौरोजी ।

1918 के बॉम्बे अधिवेशन में भी पार्टी को एक और विभाजन का सामना करना पड़ा था । यह काँग्रेस का दूसरा विभाजन था । देश की आजादी से पहले इसके अलावा दो बार और भी काँग्रेस में विभाजन की नौबत आ गई थी । इसके चलते ही 1923 में मोतीलाल नेहरू और चित्तरंजन दास ने स्वराज पार्टी का गठन किया था 1939 में सुभाष चनद्र बोस ने शीलभद्र याजी और शार्दूल सिंह के साथ मिल कर फॉरवर्ड ब्लॉक का गठन किया था । देश की आजादी के चार साल बाद एक चुनाव लड़ने वाली राजनीतिक पार्टी के रूप में अखिल भारतीय काँग्रेस पार्टी को साल 1951 में पहली बार विभाजन का सामना तब करना पड़ा था जब आचार्य जे बी कृपलानी ने काँग्रेस से अलग होकर किसान मजदूर प्रजा पार्टी और प्रोफेसर एन जी रंगा ने हैदराबाद स्टेट प्रजा पार्टी का गठन किया ठा । इसी साल सौराष्ट्र में भी क्षेत्रीय स्तर की काँग्रेस पार्टी का गठन हुआ था । इसी कड़ी मेंसाल 1956 में सी राजगोपालाचारी ने इंडियन नैशनल डेमोक्रेटिक पार्टी का गठन किया था । इसी तरह 1959 में देश के बिहार, ऑडिशा , गुजरात और राजस्थान राज्यों में काँग्रेस पार्टी का विभाजन हुआ था । 1964 में केरल में के एम जॉर्ज ने केरल काँग्रेस नाम से एक नई पार्टी का गठन किया था । 1967 में उत्तर भारत के प्रभावशाली काँग्रेस नेता चौधरी चरण सिंह ने भारतीय क्रांति दल के नाम से एक नई पार्टी बनाई थी । यही पार्टी बाद में भारतीय लोक दल भी कहलाई ।

1969 में इंदिरा गांधी के नेतृत्व में काँग्रेस का एक ऐसा विभाजन हुआ जिसने इंदिरा गांधी और उनके परिवार के किसी व्यक्ति के नेतृत्व वाले काँग्रेस संगठन को ही अखिल भारतीय स्तर की काँग्रेस पार्टी की पहचान दिलवा दी है । 1969 का यह काँग्रेस विभाजन देश की राजनीति में इसलिए भी अहं स्थान रखता है क्योंकि इसी विभाजन के चलते ही काँग्रेस को पार्टी के अधिकृत चुनाव चिन्ह दो बैलों की जोड़ी से हाथ धोना पड़ा था और इसके स्थान पर उस समय की इंदिरा काँग्रेस को गाय का दूध पीता हुआ बछड़ा चुनाव चिन्ह आबंटित हुआ था । बाद में इसके स्थान पर हाथ का पंजा काँग्रेस का अधिकृत चुनाव चिन्ह बना । बाद के दौर में 1988 में वी पी सिंह ने काँग्रेस से अलग होकर जनतादल का गठन किया था । स्वर्गीय अर्जुन सिंह , स्वर्गीय नारायण दत्त तिवारी सरीखे नेताओं ने तिवारी काँग्रेस स्वर्गीय माधान राव सिंधिया ने मध्य प्रदेश विकास काँग्रेस और जी के मऊपनार ने तमिल मनीला काँग्रेस जैसी कई अलग झ अलग तरह की काँग्रेस पार्टियों का गठन किया जरूर था लेकिन बाद में इन सभी ने सोनिया गांधी की नेतृत्व वाली अखिल भारतीय काँग्रेस पार्टी में विलय करना ही ठीक समझा । अलबत्ता इसके समानांतर जगमोहन रेड्डी के नेतृत्व में अलग होकर बनी वाई एस आर काँग्रेस , ममता बनर्जी की नेतृत्व वाली तृणमूल काँग्रेस और शरद पवार की नेतृत्व वाली राष्ट्रवादी काँग्रेस पार्टी क्षेत्रीय पार्टी के रूप में अपना वजूद जरूर बनाए हुए है । काँग्रेस से अलग होकर बनी 80 फीसदी से अधिक पार्टियां वाजोड़ में नहीं हैं । इससे एक बात और सिद्ध होती है कि काँग्रेस को अपनी राष्ट्रीय पहचान बनाए रखने के लिए गांधी झ नेहरू परिवार के किसी सदस्य को अपना मुखिया बनाए रखना उसकी एक राजनीतिक विवशता ही है । क्षेत्रीय नेता ऐसी किसी पार्टी को क्षेत्रीय पहचान तो दे सकते हैं लेकिन राष्ट्रीय पहचान नहीं । शायद इसी वजह से काँग्रेस का एक बड़ा तबका राहुल गांधी को पार्टी अध्यक्ष बनाने के लिए जोर देता दिखाई दे रहा है ।

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक जितेंद्र तिवारी द्वारा इंप्रेशन प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18/19/20, सी ब्लॉक, सेक्टर 59, नोएडा, उ.प्र.-201301 से मुद्रित तथा ई632/7 सी संगम विहार साउथ दिल्ली -110080 से प्रकाशित। प्रकाशित लेखों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा। प्रधान संपादक : **जितेंद्र तिवारी** प्रबंध संपादक :**राजेश तिवारी**
RNI NO.: DELHIN/2016/70363 Email:tarkasnews@gmail.com Mob:9990170069 Website: www.rajneetiktarkas.in

सायरस मिस्त्री के जीवन से क्या सीखें

आर.के. सिन्हा

टाटा ग्रुप के पूर्व चेयरमेन सायरस मिस्त्री की सड़क हादसे में अकाल मृत्यु से दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री साहिब सिंह वर्मा, मशहूर कलाकार जसपाल भट्टी और कांग्रेस के नेता राजेश पायलट और मोदी सरकार के वरिष्ठ कैबिनेट मंत्री गोपीनाथ मुंडे के सड़क हादसों का याद आना स्वाभाविक ही है। ये सब सड़क हादसों के ही शिकार हुए। अभी तो इन्हें देश को बहुत कुछ देना था। सायरस मिस्त्री की मौत से भारत का आमजन और कोरपोरेट संसार हिल सा गया है। मिस्त्री चमक-धमक से दूर रहने वाले, एक सज्जन, प्रतिभाशाली और गर्मजोशी से भरे मनुष्य थे। मिस्त्री अपनी पीढ़ी की श्रेष्ठ व्यावसायिक प्रतिभाओं में से एक और बेहद सज्जन किस्म के व्यक्ति थे। उनका वैश्विक दिग्गज कंपनी शापुरजी-पालनजी पालोंजी को खड़ा करने में अहम योगदान था। सायरस मिस्त्री में नेतृत्व के पर्याप्त गुण थे। उन्हीं की सरपरस्ती में शापुरजी-पालनजी मिस्त्री ग्रुप इंफ्रास्ट्रक्टर क्षेत्र के अनेक बड़े प्रोजेक्ट देश और देश से बाहर पूरे कर रहा था। राजधानी में प्रगति मैदान को भी उन्हीं की कंपनी फिर से नये ढंग से तैयार कर रही है। उन्होंने लंदन से सिविल इंजीनियरिंग की ड्रिगी भी ली थी। इसका उन्हें अपने बिजनेस को गति देने में भरपूर लाभ भी मिल रहा था।

हो सकता है कि यह जानकरी सबको न हो कि सायरस मिस्त्री के दादा ही मशहूर फिल्म मुगले आजम जैसी बड़ी पिक्चर के निमार्ता थे। उन्होंने उसके निर्माण में भरपूर इनवेस्ट किया था। ये बात अलग है कि न तो सायरस मिस्त्री ने और न ही उनके पिता पालानजी मिस्त्री ने फिल्म निर्माण में कोई दिलचस्पी दिखाई । अरबों की चल-अचल संपत्ति होने पर भी सायरस मिस्त्री का लाइफ स्टाइल काफी सादगी से भरा हुआ था। वे अपने घरों के निर्माण में अरबों रुपये खर्च नहीं करते थे। वे काम भर ही से काम मतलब रखते थे। वे एक बाकी उद्योगपतियो की तरह उद्योगपतियों के संगठन सीआईआई या फिक्की से भी सक्रिय रूप से नहीं जुड़े थे। उनका किसी सियासी दल से भी कोई सीधा संबंध नहीं। कह सकते हैं कि वे एक गैर-राजनीतिक इंसान थे। उनका सारा फोकस अपने बिजनेस पर ही रहता था। अभी पिछली 3 जून को ही तो उनके वयोवृद्ध पिता का निधन हुआ था।

सायरस मिस्त्री को भारत ने तब जाना था जब उन्हें रतन टाटा के बाद टाटा ग्रुप की चेयरमेनशिप मिली थी। वे टाटा ग्रुप के मुख्यालय बॉम्बे हाउस में बैठने लगे थे। यह साल 2012 की बात है। लेकिन, वे टाटा ग्रुप के चेयरमेन इसलिए बने थे क्योंकि उनके परिवार के स्वामित्व वाले ग्रुप शापुरजी-पालनजी की टाटा सन्स में टाटा परिवार के बाद सर्वाधिक शेयरहोल्डिंग है। उन्हें टाटा ग्रुप का पहले चेयरमेन बनवाने और फिर उस पद से हटवाने में रतन टाटा की ही भूमिका रही थी। उनके बाद एन. चंद्रशेखरन टाटा ग्रुप के चेयरमेन बने। वे टाटा ग्रुप के पहले गैर-पारसी चेयरमेन हैं। कुछ उसी तरह से जैसे मिस्त्री पहले गैर टाटा थे, टाटा ग्रुप के चेयरमेन।

सायरस मिस्त्री के टाटा सन्स के बोर्ड में 2006 में शामिल होने के बाद से ही रतन टाटा के साथ विवाद शुरू हो गया था। कहा जाता है कि विवाद के मूल में कारण यह था कि सायरस मिस्त्री चाहते थे कि टाटा ग्रुप अपने लाभ का जो हिस्सा परोपकारी कार्यों में लगाता है, उस पर लगाम लगाये। रतन टाटा इस राय को नहीं मानते थे। उनका मानना था कि टाटा ग्रुप अपने मूल लक्ष्यों से दूर नहीं जा सकता। वह राष्ट्र निर्माण में अपनी अहम भूमिका निभाता रहेगा। इसमें कोई शक नहीं कि टाटा ग्रुप ने भारत में विज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान दिया है। सायरस मिस्त्री और रतन टाटा के रास्ते थोड़े से अलग-अलग थे। यहां पर वे हवा के रुख को समझ नहीं सके। बहरहाल, सायरस मिस्त्री को यह चिंता थी कि टाटा ग्रुप की टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस, और टाटा स्टील को छोड़कर चूँकि अधिकतर कंपनियां घाटे में हैं या पर्याप्त लाभ नहीं कमा रही हैं। अतः उन्हें गति दी जाए। यह सच भी है कि टाटा ग्रुप की ताकत तो टीसीएस ही है। टाटा ग्रुप के कुल मुनाफे का बड़ा हिस्सा टीसीएस ही कमाती है। कहा तो यह भी जाता है कि सायरस मिस्त्री नैनों कार के प्रोजेक्ट में बड़े निवेश से भी नाखुश थे। वे मानते थे कि नैनो को टाटा ग्रुप ने बहुत देर से लांच किया। इससे टाटा ग्रुप को कोई खास लाभ नहीं हुआ। उनका नैनो प्रोजेक्ट पर सवाल खड़े करना रतन टाटा पर सीधे हमले करने के बराबर था। आखिर नैनो रतन टाटा के दिल करीब का प्रोजेक्ट था। वे इससे भावनात्मक रूप से जुड़े हुए थे।

“ सारयस मिस्त्री के हादसे का शिकार होने के बाद ये सवाल फिर से अहम हो गया है कि हमारे देश की सड़कें और हाईवे कब जाकर पूर्णतः सुरक्षित होंगे। हर साल देश में लगभग डेढ़ लाख से ज्यादा लोग सड़क हादसों के शिकार हो जाते हैं। सड़कों पर अराजकता को तो खत्म करना ही होगा। इसके अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं बचा है।

इस बीच, सारयस मिस्त्री के हादसे का शिकार होने के बाद ये सवाल फिर से अहम हो गया है कि हमारे देश की सड़कें और हाईवे कब जाकर पूर्णतः सुरक्षित होंगे। हर साल देश में लगभग डेढ़ लाख से ज्यादा लोग सड़क हादसों के शिकार हो जाते हैं। सड़कों पर अराजकता को तो खत्म करना ही होगा। इसके अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं बचा है।

सड़क हादसों के शिकार होने वालों में 50 फीसद 14 से 35 साल की उम्र के लोग ही होते हैं। इनमें से बहुत सारे अपने परिवार के एकमात्र कमाने वाले सदस्य होते हैं थे। वैसे तो सड़क हादसों के तमाम कारण गिनाए हैं। पर तेज रफ्तार से वाहन चलाना सबसे बड़ा कारण है। अभी साफ नहीं है कि जिस मर्सडीज कार में सायरस मिस्त्री सवार थे, वह कितनी स्पीड से चल रही थी। रफ्तार पर नियत्रंण तो करना होगा। तेज वाहन चलाने वालों पर कठोर दंड लगाया जाना चाहिए। समझ नहीं आता कि कार और दूसरे वाहन चालक अनाप- शनाप गति से अपने वाहनों को क्यों दौड़ाते हैं। ये लेन ड्राइविंग में यकीन नहीं करते। ये हमेशा ओवरटेक करने की फिराक में रहते हैं। सड़क हादसों में न जाने कितने लोग जीवन भर के लिए विकलांग हो जाते हैं, इसका तो कहीं से कभी कोई आंकड़ा मिल ही नहीं सकता।

सायरस मिस्त्री के निधन से दो बातें सीखी जा सकती हैं। पहली, कैसे कोई कारोबारी मीडिया की सुर्खियों से दूर रहकर काम करे। दूसरा, देश को अपनी सड़कों को सुरक्षित बनाने के ठोस उपाय करने होंगे। मुझे ऐसा लगता है कि साइरस की कार उनकी महिला मित्र की जगह कोई पेशेवर ड्राइवर चला रहा होता तो बेहतर रहता। चलो, अब तो जो होना था सो हो गया। लेकिन, मैं समझता हूँ कि देश के उजार्वान परिवहन मंत्री नितिन गडकरी जी दुर्घटनाओं के नियंत्रण हेतु अवश्य ही कोई ठोस और सख्त कदम उठायेंगें।

(लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तभकार और पूर्व सांसद हैं)

भारत में 48 साल बाद किया जा रहा है वर्ल्ड डेयरी सम्मिट का आयोजन

विनोद तकिया वाला

आई डी एफ चार दिवसीय विश्व स्तरीय सम्मेलन का आयोजन ग्रेटर नोएडा स्थित एक्सपो मार्ट में प्रातः 12 सितम्बर से हो रहा है व15 सितम्बर 22 तक चलेगा।आप को बता दे कि भारत में यह सम्मेलन 48 साल बाद वर्ल्ड डेयरी सम्मिट का आयोजन किया जा रहा है।सम्मेलन का उद्देश्य भारत में डेयरी उद्योग के विकास में वैश्विक पेशेवरों की दक्षता का लाभ लेना और भारतीय डेयरी उद्योग को वैश्विक मंच पर स्थापित करना है।इस आई डी एफ वर्ल्ड डेयरी समिट-2022 का उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी करेंगे।इस डेयरी सम्मेलन में देश-विदेश के 15 सौ से अधिक दुग्ध उत्पादक व किसानों के साथ इस कारोबार एवं उद्योग से जुड़े विशेषज्ञ,नीति निर्धारक और प्रमुख नामचीन कारपोरेट हाउस के प्रतिनिधि शामिल होंगे और अपने अनुभवों को साझा करेंगे।समिट में कई अहम मुद्दों पर विचार-विमर्श से इस उद्योग से जुड़े सुझाव एवं मार्गदर्शन का हमें संदेश मिलेगा।

ज्ञायत्व रहे कि भारत में इन दिनों लगभग आठ करोड़ दुग्ध किसान हैं,जिनमें डेयरी उत्पादन के क्षेत्र में बहुसंख्यक छोटे किसान शामिल हैं।इनके पास औसतन 1 से 3 पशु होते हैं जबकि भारत की तुलना में दुनिया के अन्य देशों में यह संख्या सैकड़ों में होती है। बावजूद इसके भारत विश्व का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक देश है और इससे जुड़े लगभग आठ करोड़ डेयरी किसानों से यह जाहिर होता है कि इस क्षेत्र में जीवन-यापन का यह एक बहुत बड़ा स्रोत है।भारत में डेयरी उद्योग के महत्व को हम इस बात से भी रेखांकित कर सकते हैं कि जहाँ स्वंय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस संगम का उद्घाटन करने जा रहे हैं।इस सम्मलेन में केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह, केंद्रीय पशुपालन एवं डेयरी उद्योग मंत्री पुरुषोत्तम रुपाला,वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल,कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर एवं उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ समेत कई राज्यों के मुख्यमंत्री, मंत्री,विभिन्न डेयरी उद्योग के महाप्रबंधक और देश-विदेश से आए विशिष्ट मेहमान यहां विचार मंथन करेंगे।इसमें कमाई और रोजगार की संभावना के ऊपर चर्चा होगी।दुग्ध क्षेत्र में एक बार फिर मुकम्मल क्रांति का आ'ान किया जाएगा।राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के अध्यक्ष शाह के मुताबिक यह सम्मेलन दुग्ध विकास के क्षेत्र में ऐतिहासिक और शानदार होने वाला है जो विभिन्न बिंदुओं पर गौर करते हुए मील का पत्थर साबित होगा। जलवायु के अनुकूल डेयरी उद्योग का विकास करना इसका मुख्य उद्देश है,साथ ही पोषण और आजीविका पर भी इसमें चर्चा की जाएगी।गौरतलब है कि हिंदुस्तान के दुग्ध उत्पादन का आकलन इस बात से समझा जा सकता है कि या कृषि एवं पशुपालन के क्षेत्र में सबसे बड़ा योगदान करता है और इसकी प्रोडक्शन वैल्यू 9.3 लाख करोड़ रुपए प्रति वर्ष है।

दुनिया में डेयरी क्षेत्र में विकास दर 2 प्रतिशत है।जबकि भारत में यह दर 6 प्रतिशत है लेकिन आने वाले समय में भारत में इस क्षेत्र में विकास दर और बढ़ेगी.

इस समय भारत दुनिया में दुग्ध उत्पादन में नंबर एक पर है। हमारा उत्पादन 21 करोड़ टन है. दुनिया में दूध की उपलब्धता प्रति व्यक्ति् 310 ग्राम प्रतिदिन है। जबकि हमारे यहां पर 427 ग्राम प्रति दिन है ।यह एक बड़ी उपलब्धि है।हमारे देश में डेयरी उद्योग सामुदायिक या कॉपरेटिव है।इससे बड़े स्तर पर रोजगार और स्वरोजगार भी सृजित हो रहे हैं।इस पर प्रकाश डालते हुए नेशनल डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड के चेयरमेन और आइ डी एफ के इंडियन नेशनल कमेटी के सदस्य सचिव शमीनेश शाह का कहना है कि हमारे देश में डेयरी उद्योग कितना महत्वपूर्ण है।इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि इस उद्योग में आठ करोड़ किसान जुड़े हुए हैं।हमारे देश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती देने के साथ ही ग्रामीण स्तर पर लाखों रोजगार भी सृजित करता है।ऐसे में यह अनुमान लगाया जा सकता है कि वर्ल्ड डेयरी सम्मिट भारत के लिए कितना अहम भुमिका है।इस उद्योग से ना केवल किसान बल्कि भूमिहीन किसान भी दुग्ध क्षेत्र से जुड़े हुए हैं।हमारे देश में दूध के काम से हजारों लाखों लोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संबंधित हैं। यही वजह है कि इस इस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन की थीम लाइवलीहुड एंड न्यूट्रिशन रखी गई है।इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि हमारे यहां पर किसानों के लिए दूध जीवन यापन का साधन भी है।यह उनकी आमदनी का स्त्रोत भी है।इस सम्मेलन में करीब 40–45 देश के प्रतिनिधि हिस्सा लेंगे।डेयरी उद्योग के जानकारों का मानना है कि दूध की उपयोगिता आम आदमी के जीवन पौष्टिकता के कई स्त्रोत होते हैं।भारत में एक बड़ी आबादी शाकाहारी है।ऐसे में उनके लिए दूध और उससे बने पदार्थ पौष्टिकता के लिए काफी अहमियत रखते हैं।

वैश्विक महामारी कोरोना के बाद इंटरनेशनल डेयरी फैडरेशन का पहला फिजिकल कार्यक्रम है।इससे पहले फिजिकल कार्यक्रम इस्तानाबुल में वर्ष 2019 में हुआ था।इस सम्मिट के दौरान भारत वैश्विक स्तर पर कार्य कर रहे पेशेवरों और इंटरनेशनल डेयरी फैडरेशन के अनुभव और कार्य दक्षता का लाभ हासिल करेगा। हम इस सम्मिट से विश्व स्तर पर डेयरी क्षेत्र में हो रहे बदलाव से सीखने का कार्य करेंगे।इसके साथ ही हम अपने देश के डेयरी क्षेत्र के बेहतरीन कार्यों–गुण को दुनिया के सामने भी रखेंगे। जिससे वैश्विक स्तर पर भारत के समझौते होने की संभावना और बढ़े।डेयरी क्षेत्र में भारत आत्मनिर्भर है।हम जितनी खपत करते हैं।उतना हम अपने देश में ही बनाने में सक्षम हैं।

भारत विश्व में सबसे बड़ा दूध उत्पादक देश है।वर्ष 2010-11 में भारत का कुल दूध उत्पादन 12.18 करोड़ टन रहा। योजना आयोग के अनुमान एवं सकल घरेलू उत्पाद की लगातार उच्च वृद्धि के कारण हुए सुधार के पश्चात यह संभावना है कि दूध की मांग 2016-17 तक(12वीं पंचवर्षीय योजना का अंतिम वर्ष) लगभग15.5 करोड़ टन तथा 2021-22 तक लगभग 20 करोड़ टन होगी।दूध की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए अगले 15 वर्षों में वार्षिक वृद्धि को 4 प्रतिशत से अधिक रखना आवश्यक है।

हम सभी को इस अन्तर्राष्ट्रीय डेयरी सम्मेलन से बहुत आशा व उम्मीदें है।खैर यह कहते हुए आप से विदा लेते है

ना ही काहूँ से दोस्ती।
ना ही काहूँ से बैर॥
खबरी लाल तो मांगे।
सबकी खैर ॥

फिर मिलेगें तीरक्षी नजर से ‘ तीखी खबर के संग।

अलविदा।

राजनीतिक तरकस
देश का सबसे तेज़ साप्ताहिक
समय से संवाद
वर्ष : 07 , अंक : 05, नई दिल्ली, बुधवार, 28 अक्टूबर, 2022

क्या शिवराज को 2023 में भी वॉक ओवर तय..!

ऋतुपर्ण दवे

देश का दिल मध्यप्रदेश हमेशा से ही अपनी सियासत के लिए बेहद अलग मुकाम रखता रहा है। एक दौर हुआ करता था जब यहाँ की सियासत में रियासत बेहद खास होती थीं। अब भी हैं लेकिन वक्त के कुछ बदला जरूर है। फिलाहाल एक बेहद आरम और साधारण किसान परिवार से आने वाले तथा अपने दमखम पर राजनीति में खास मुकाम तक पहुँचे शिवराज सिंह चौहान न केवल मुख्यमंत्री हैं बल्कि भाजपा के मुख्यमंत्रियों में अब तक के सबसे लंबे कार्यकाल को पूरा करने का रिकॉर्ड बना निरंतर बने हुए हैं। उनके भविष्य को लेकर चाहे जितनी और जैसी अटकलबाजियाँ लगें वह केवल कयास से ज्यादा कुछ नहीं निकलीं।

यह वही मप्र है जहाँ पहले भी और अब भी राजघराने या यूँ कहें कि राज परिवार, जागीरदार और जमींदार, सियासत में खुद को सफल बनाने और जनता से जुड़े रहने के लिए किसी न किसी तरह से सक्रिय हैं तथा देसी रियासतों के विलय के बाद लोकतंत्र के जरिए जनता पर शासन करने की सफल नीति को अपनाया। ग्वालियर के सिंधिया राजघराना से स्व. विजयाराजे सिंधिया, स्व. माधवराव सिंधिया के बाद अब ज्योतिरादित्य सिंधिया की भूमिका सामने है। वहीं उनकी एक बुआ राजस्थान की मुख्यमंत्री रहीं तो दूसरी प्रदेश में मंत्री हैं। राघवगढ़ राजघराने के दिग्विजय सिंह 10 साल तक प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे तो अब उनके बेटे और पूर्व मंत्री जयवर्धन सिंह और भाई लक्ष्मण सिंह विधायक हैं। इनसे पहले चुरहट राजघराने के अर्जुन सिंह भी प्रदेश के 6 साल तक मुख्यमंत्री रहे। अब इनके बेटे पूर्व मंत्री अजय सिंह प्रदेश के बड़े नेता हैं। वहीं रीवा राजघराने के पुष्पराज सिंह मंत्री रहे हैं और अब भी सक्रिय हैं। मकड़ाई (हरदा) राजघराने के विजय शाह और संजय शाह दोनों ही विधायक और भाजपा के बड़े नेता हैं। विजय शाह मंत्री हैं। एक भतीजा अभिजीत कांग्रेस के युवा चेहरा हैं। देवास राजघराने के तुकोजीराव पवार की मृत्यु के बाद उनकी पत्नी गायत्री राजे पवार विधायक के रूप में राजनीतिक विरासत को संभाले हुए हैं। सोहागपुर (शहडोल) रियासत से मृगेन्द्र सिंह और उनके अनुज गंभीर सिंह भी विधायक रह चुके हैं। राजघरानों से अब तक मप्र में 4 मुख्यमंत्री हुए हैं। संविद सरकार में गोविंद नारायण सिंह, उनके इस्तीफे के बाद गोंड आदिवासी राजा नरेशचंद्र सिंह। बाद में कॉंग्रेस सरकार में अर्जुन सिंह तीन बार तो दिग्विजय सिंह दो बार मुख्यमंत्री बने।

मप्र में ग्वालियर, राघोगढ़, रीवा, चुरहट, नरसिंहगढ़, मकड़ाई, खिचलीपुर, देवास, दतिया, छतरपुर, पन्ना जैसे छोटे-बड़े राजघराने राजनीति में काफी सक्रिय और सफल थे और हैं। लेकिन गणना की जाए तो मप्र की सियासत की डोर कभी राजनीतिज्ञों तो कभी आम हाथों में ज्यादा रही। अब तक प्रदेश को 32 मुख्यमंत्री मिले जिनमें रविशंकर शुक्ल (एक बार), भगवंतराव मंडलोई, कैलाश नाथ काटजू, द्वारका प्रसाद मिश्रा (दो-दो बार), गोविंद नारायण सिंह, नरेशचंद्र सिंह (एक-एक बार), श्यामाचरण शुक्ल (तीन बार), प्रकाश चंद्र सेठी (दो बार), कैलाशचंद्र जोशी, विरेंद्र कुमार सकलेचा (एक-एक बार), सुंदरलाल पटवा (दो बार), अर्जुन सिंह (तीन बार), मोतीलाल वोरा, दिग्विजय सिंह (दो-दो बार), उमा भारती, बाबूलाल गौर, कमलनाथ (एक-एक बार) और शिवराज सिंह चौहान तीन बार पहले और चौथी बार अब तक हैं। जबकि प्रदेश में तीन बार राष्ट्रपति शासन भी लगा।

निश्चित रूप से मप्र की राजनीति कुछ अलग तो काफी घुमावदार भी है। कभी लगता है कि राजघरानों के प्रति विश्वास बरकरार है तो कभी आदिवासी वोट बैंक निर्णायक लगते हैं। चुनावों में आदिवासियों का साफ प्रभाव यही दिखाता है। बीते दो विधानसभा चुनाव के आँकड़े देखें तो सब कुछ समझ आता है। यहाँ आदिवासियों की बड़ी आबादी है जिनका 230 विधानसभा सीटों में से 84 पर सीधा-सीधा प्रभाव है। आदिवासी बहुल इलाके में भाजपा को 2013 में 59 सीटों पर जीत हासिल हुई थी जबकि 2018 में 84 में 34 सीटों पर सिमट कर रह गई। शायद इन्हीं कम हुई 25 सीटों के चलते तब भाजपा सीधे-सीधे सरकार बनाने से चूक गई थी। इसे यदि आरक्षण के लिहाज से देखें तो 2013 में आरक्षित 47 सीटों में भाजपा 31 पर जीती जबकि कांग्रेस केवल 15 ही जीत पाई। वहीं 2018 के नतीजे लगभग उलट रहे

जहाँ कॉंग्रेस ने 30 सीटें जीती तो भाजपा महज 16 पर सिमट गई। एक निर्दलीय भी जीता। इसी चलते तब मप्र में कॉंग्रेस की कमलनाथ सरकार बनी थी। लेकिन अन्दरूनी कलह और सत्ता में पकड़ बनाए रखने, वर्चस्व की लड़ाई में पारस्परिक विफलता के चलते केवल 15 महीनों में हुई बड़ी बगावत से कॉंग्रेस सरकार गिर गई। इसके लिए तब दो राजघरानों ज्योतिरादित्य सिंधिया और दिग्विजय सिंह की रस्साकशी सबने देखी। कमलनाथ और उनके सिपहसलारों पर उंगलियां भी उठीं। कहीं विधायकों का उतावलापन तो कहीं मीडिया में आए बेतुके बयान। गुरुग्राम की होटल में दो विधायकों का हंगामा तो सिंधिया समर्थक 22 विधायकों की बेंगलुरू में खेमेबाजी ने आखिर 15 सालों के निर्वासन के बाद सत्ता में लौटी कॉंग्रेस को 15 महीनों में ही चलता कर दिया। 22 कॉंग्रेसी विधायक जिनमें 6 मंत्री थे ने इस्तीफा देकर कमलनाथ सरकार गिरा दी। इसमें ग्वालियर राजघराने के ज्योतिरादित्य सिंधिया की सबसे खास भूमिका रही। इसी के बाद चौथी बार शिवराज सिंह चौहान मुख्यमंत्री बने। तीन और विधायकों के इस्तीफे, तीन के निधन से मध्य प्रदेश में खाली हुई 28 सीटों पर 3 नवंबर 2020 को मतदान हुआ जिसमें भाजपा 19 तो कांग्रेस केवल 9 सीट जीत पाई। आखिर बहुमत के आँकड़ों में कॉंग्रेस पिछड़ गई और बचे कार्यकाल के बनवास पर मुहर लग गई। मजबूरन उपचुनाव झेल चुकी कॉंग्रेस में बड़े-बड़े तुरुप के इक्कों के बावजूद संगठनात्मक पकड़ कमजोर हुई जिसका नतीजा सामने है। इस सत्ता परिवर्तन की कड़ियाँ एक नहीं कई थीं जिसकी जड़ में कॉंग्रेस की अन्दरूनी कलह ज्यादा रही।

हाल ही में 347 निकाय चुनावों में भाजपा ने 256 में बढ़त दर्ज की। लेकिन सात बड़े शहर में हाथ से निकल गए। कांग्रेस केवल 58 बढ़त ले पाई। भाजपा की सफलता का प्रतिशत 74 तो कॉंग्रेस का 18 रहा। सीटों के हिसाब से देखें तो भाजपा को 52.29 और कॉंग्रेस को 28.39 प्रतिशत सीटें मिली। श्रेय शिवराज को मिला। अब शिवराज रोजाना कभी समीक्षा तो कभी मॉर्निंग ऐक्शन में तो कहीं जनसभा में ही अधिकारियों को फटकार और निलंबन के आदेश देते हुए बरखास्तगी की चेतावनी और सख्ती भरे तेवर दिखाते हैं। शहडोल, सिंगरौली, पन्ना, बालाघाट, उमरिया, जबलपुर, सिवनी सहित कई जिलों के उदाहरण सामने हैं। विकास कार्य समय पर कराने, आवास योजनाओं में लेटलतीफी रोकने, ढंग से राशन वितरण, व्यवस्थित सीएम राइज स्कूल, दुरुस्त शहरी पेयजल योजना, आंगनबाड़ी में पेयजल, बदहाल बिजली व्यवस्था, खस्ताहाल सड़कें, सार्वजनिक स्थानों पर अतिक्रमण यानी जनता से सीधे जुड़े मसलों को लेकर शिवराज बेहद सख्त दिखते हैं। जहाँ से सही जवाब नहीं मिलता या अधिकारी किन्तु-परन्तु बताते हैं तो वहीं फटकार लगाते हैं। शहडोल का उदाहरण काफी है।

ऐसा लगता है कि सरकार की आँख,कान और हाथ बनी ब्यूरोक्रेसी को लेकर उनका हालिया अनुभव काफी कड़वा रहा जो उनके नए ऐक्शन से झलकता है। यह सिंगरौली, जबलपुर, में रोड शो तो धनपुरी(शहडोल) में जनसभा वहीं उमरिया की वर्चुअल सभा सहित कई अन्य स्थानों के निराश करने वाले नतीजों का असर है। वह सार्वजनिक समीक्षा करते हैं जिसे तमाम मीडिया माध्यम लाइव दिखाते हैं। उनका यह मनोविज्ञान ब्यूरोक्रेट्स को भले ही न भाए लेकिन आमजन को लुभा रहा है।

मध्यप्रदेश में जहाँ कॉंग्रेस अब भी कमजोर दिख रही है तो शिवराज सिंह चौहान को लेकर भी सुर्खियाँ कम नहीं होतीं। भाजपा संसदीय बोर्ड से बाहर होने के बावजूद उनकी शालीनता ने कहीं न कहीं राष्ट्रीय नेतृत्व को प्रभावित तो किया होगा। वहीं कहना कि मुझसे दरी बिछाने को कहा जाएगा तो बिछाउंगा। यह उनकी बुध्दिमत्ता है जो खुद को पार्टी से बड़ा कभी नहीं दिखाते। उनकी हालिया राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा से गर्मजोशी भरी मुलाकातें और अक्टूबर में पंचायती राज के नवनिर्वाचित सदस्यों के सम्मेलन में मप्र आने की हामी, मिशन 2030 का विजन तैयार कर 5 मेगा प्रोजेक्ट प्रधानमंत्री के हाथों शुरू करा 5 बड़ी जनसभाओं हेतु आमंत्रित करना शिवराज की राजनीतिक चातुर्यता के साथ बताता है कि निगाहें 2023 के विधानसभा और 2024 के आम चुनावों से बहुत आगे देख रही हैं। इससे पार्टी में उनका प्रभाव और बढ़ेगा वहीं प्रतिद्वन्दियों को मजबूरन ही सही मोदी जी की सभा में शिवराज के साथ रहना ही होगा। शायद यही गुर शिवराज सिंह को और मजबूत करता है।

समीकरण कैसे भी बनें शिवराज सिंह की मजबूती में कोई कमीं नहीं दिखती। क्या कॉंग्रेस भी बिखराव को थाम असंतुष्टों का साध पाएगी? बिखरी कॉंग्रेस पर मध्यप्रदेश के मतदाता कितना भरोसा जता पाएंगे? यह सही है कि कॉंग्रेस संगठन को लेकर हाल-फिलाहाल जो हालात दिल्ली में हैं उससे मजबूती को लेकर संशय स्वाभाविक है। इतना जरूर है कि मप्र में फिलाहाल कोई तीसरी ताकत उभरती नहीं दिखती। इसलिए 2023 का सीधा मुकाबला भाजपा व कॉंग्रेस में होगा। बाजी वही मारेगा जो गुटीय बिखराव समेट जनता से जुड़ेगा। कहने की जरूरत नहीं कि अगले विधानसभा चुनाव में कौन कितना सफल होगा क्योंकि ये पब्लिक है सब जानती है! बस देखना इतना है कि 2023 में किसे संगठन और जनता से सत्ता का वॉक ओवर मिलेगा और कौन फिर वनवास झेलेगा।

ऑनलाइन और ऑफलाइन का संधि काल भी शांत होगा

सुरेश खांडवेकर

डिजिटल यानी ईमेल से संवाद 1971 से शुरू हुआ । उन्नत होते होते इस डिजिटल माध्यम ने सारा विश्व का वातार्लाप, संवाद और लेन-देन घेर लिया है। अब बिना डिजिटल के बात ही नहीं होती। इससे भौतिक बचते भी बहुत हुई है। आजकल इसे ही सजग आधुनिकता कहने लगे हैं । कागजी कार्रवाई लगभग एक चौथाई रह गई है। समाचार पत्रों की स्थिति आपके सामने हैं। सोशल मीडिया ने इसे संभाल रखा है। आजकल कागज छपाई में कम पैकेजिंग में ज्यादा लगता है।

इस समय सबसे ज्यादा कष्ट व्यापारियों को हो रहा है डिजिटल इन लाइन लेनदेन की वजह से। रुपयों की लेन-देन भी डिजिटल और वस्तुओं की ऑनलाइन मार्केटिंग मार्केटिंग। इस कारण सारे परंपरागत व्यवहार धरातल पर आने लग गए हैं। उपभोक्ता की हर सामग्री अब घर बैठे घर आने लगी है। इससे परंपरागत व्यापारी एजेंसियों के कर्ता-धर्ता बहुत दुखी हो गए है। अपनी सजी-सजाई और भरी दुकानों में हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं । क्योंकि खरीददार वैसे नहीं आ रहे हैं जैसे पहले आते थे। रिटेल ही नही थोक व्यापार भी अब लाइन माध्यम से हो रहा है। विशेष यह की इसमें तरह-तरह के प्रलोभन और विकल्प दिए जा रहे हैं जो ग्राहकों को बुरी तरह से आकर्षित कर रहे हैं।

अब चल रहा है ऑनलाइन और ऑफलाइन का व्यापार का संधि काल। इसमें परंपरागत लेनदेन के कारोबारियों की जड़े हिलने लगी है। संधि काल में ऐसे ही होता है जब कोई नया फैशन शुरू हो जाता है । तो पुराना चलन चरमराने लग जाता है। नया चलन चालू हो जाता है तो उस की उसकी अच्छाई ही ज्यादा दिखने लगती है ।जैसे अंधे प्रेम में प्रेमी को प्रेमिका की या प्रेमिका को प्रेमी की बुराई नहीं दिखाई देती।

ऐसे ही नया चलन ज्यादा सहज और आसान मालूम पड़ता है । उसमें अनेक सुविधाएं दिखनें लगती है। लाइन बिजनेस भी इसी तरह आकर्षित कर रहा है । मोबाइल फोन में यह कंप्यूटर में वस्तु दिखाई तो देती है किंतु आप उसे छू नहीं सकते । उसका वजन आकार प्रकार और उसका ठोस पर नहीं देख सकते। ऑनलाइन वालों ने इसके लिए भी नए तरीके ढूंढ रखे हैं। वे उसकी जांच के

लिए अपने स्टोर्स में ग्राहकों को बुलाते हैं। कीमतों में भी भारी छूट देते हैं

परीक्षा ही सही, एक्सपेरिमेंट के तौर पर सामान्य उपभोक्ता भी उसी को अपनाना चाहता है। एक बार तो अनुभव कर ही लेना चाहता है। देखें तो सही ऑनलाइन लेनदेन कैसे होती है ? यदि एक बार का अनुभव कर देखें तो ऐसे कितने लोग हैं जो एक बार ऐसा ऑनलाइन का व्यवहार करते हैं ।कभी जूते, कपड़े, खिलौने, गद्दी, तोलिए इलेक्ट्रॉनिक चीजें, घड़ियां, फोन खरीदते हैं। धोखा भी खाते हैं पर खरीदते जरूर है। दोस्तों में अपने अनुभव शेयर करते हैं। इस तरह ऑनलाइन लेनदेन के प्रति प्रति आकर्षण हो जाता है । उसी को देख कर खुश हो जाता है।

नया ग्राहक सोचता है कि यह चीजे एक बार तो खरीद ले ऑनलाइन से। देखें क्या अनुभव होता है? ऐसे उपभोक्ताओं की भी बहुत लंबी सूची है। फिर प्रैक्टिस होने के बाद तो यह सिलसिला शुरू हो जाता है। न बाजार जाने की झंझट ।पार्किंग की समस्या । ना समय की समस्या। लेन देन घर बैठे। ऐसे भी घरों को को देखा जाता है हर तीसरे दिन जहां हर तीसरे दिन कोई मोटरसाइकिल रूकती है । जो ऑनलाइन चीजें बेचने वाला डिलीवरी ब्वॉय होता है ।यह परिवार यह दिखाना चाहता है कि वह कितना आधुनिक है और कितना समय बचाता है। लोगों ने बड़े बड़े शोरूम बरसों से नए-नए रूप रंग में सजा कर रखे हैं अब वे खाली दिखाई देते हैं। परंपरागत व्यापारियों में इस समय उदासीनता छाई हुई है। दुकानों पर पहले जैसे ग्राहक दिखाई नहीं देते। इस समय डिजिटल मार्केटिंग और परंपरा और ट्रेडिशनल मार्केटिंग का संधिकाल चल रहा है। युवा वर्ग नई मार्केटिंग व्यवस्था के प्रति आकर्षित होता है जबकि पुराना उपभोक्ता अपनी पुरानी परंपरा को अपनाते हुए बाजार जाता है। आज का नया युवा ग्राहक मोबाइल फोन पर बाजार की वस्तुएं देखना चाहता है तो पुराना ग्राहक परंपरागत दुकानों को देखते हुए, मनोरंजन करते हुए परंपरागत पुराने लोगों से दुकानदारों से मिलते हुए चीजें करता है। हाल-चाल पूछ कर एक दूसरे की एनर्जी बढ़ाते हैं। ग्राहकों का और दुकानदारों का पुराना संबंध होता है वह अपने संबंधों को नए धागे में पिरोते हैं।

जबकि जो नए ग्राहक है आधुनिकता से ग्रस्त है अपनों में स्मार्ट रहना है । धोखा खाकर भी उसे मनोरंजक दृष्टांत के रूप में दिखाते हैं। वे स्वयं को आधुनिक दिखाना चाहते हैं। इसलिए वह ऑनलाइन को ज्यादा अपनाने लगे हैं। जैसे कि पहले बताया यह ऑनलाइन और ऑफलाइन मार्केटिंग का संधि काल है। संधि काल में दोनों काल एक दूसरे से टकराते हैं। पुराने और नए के बीच को जोड़ने वाला काल। काल के गर्भ में नया पुराना सभी होता है इसलिए ऑफलाइन वालों को घबराने की जरूरत नहीं है। चुनौतिया जरूर है किंतु परंपराएं कभी मरती नहीं। परंपराएं भी मानवी विकास का एक ठहरा हुआ क्रम है। राजनीतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक त्योहार तो भौगोलिक सीमाओं में बंधे होते हैं। परंतु व्यापार तो सर्वकालिक होता है सर विश्व में कारोबार होता है। अतः ऑनलाइन कारोबार की आंधी से घबराने की जरूरत नहीं है आंधी शांत होती है और संधि काल में दो धूरी को आपस में समाविष्ट करने का प्रयास करती है। यह होगा निश्चित होगा।

वर्ष वर्ष : 07 , अंक : 05, नई दिल्ली, बुधवार, 28 अक्टूबर, 2022

शिकागो व्याख्यान : व्याख्यान नहीं दर्शन

डॉ. वंदना सेन

वर्तमान में जिस प्रकार से देश प्रगति कर रहा है, उसी प्रकार से कुछ लोग भारतीयता से दूर भी होते जा रहे हैं। हालांकि इस निमित्त कई संस्थाएं भारतीय संस्कारों को जन जन में प्रवाहित करने के लिए प्रयास कर रही हैं। यही कार्य भारत के संत मनीषियों ने किया था, जिसके चलते संपूर्ण विश्व ने भारतीय दर्शन का साक्षात्कार किया। अमेरिका के शिकागो में स्वामी विवेकानंद जी ने जिन प्रेरक शब्दों का प्रवाह प्रसारित किया, उससे उस समय विश्व के अनेक आध्यात्मिक मनीषी आप्लावित होते दिखाई दिए। एकाग्रचित्त होकर श्रवण किया गया स्वामी विवेकानंद जी का यह संबोधन एक ऐसे मार्ग का दर्शन कराता है, जो व्यक्ति और राष्ट्र को सकारात्मक बोध कराने वाला था। स्वामी विवेकानंद जी के वे विचार न केवल भारतीय ज्ञान की पताका फहराने वाले थे, बल्कि उस भाव का भी प्रकटीकरण करने में समर्थ थे, जहां भारत के विश्व गुरु होने के प्रमाण प्रस्फुटित होते हैं।

स्वामी विवेकानंद का शिकागो व्याख्यान एक ऐसा दर्शन था, जिसमें भारत के वसुधैव कुटुंबकम का भाव समाहित है। विश्व के किसी भी दर्शन में संपूर्ण विश्व को एक परिवार मानने की परंपरा और विचार परिलक्षित नहीं होता, लेकिन भारत की संस्कृति में यह दर्शन पुरातन काल से समाहित है। विश्व के सबसे पुराने प्रामाणिक ग्रंथों में भारत का मूल समाया हुआ है। इसी मूल को स्वामी विवेकानंद जी ने अमेरिका की धरती पर फैलाने का सफल प्रयास किया। हम जानते हैं कि अच्छे विचार को जन-जन में प्रवाहित करने के लिए कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। शिकागो में जाने के लिए स्वामी विवेकानंद जी ने भी अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ा। हालांकि भगवान की कृपा से यह समस्याएं दूर होती चली गई और स्वामी विवेकानंद जी अपने संकल्प को प्रवाहित करने के लिए धर्म सम्मेलन में सम्मिलित अनेक विद्वानों के समक्ष अपने विचार प्रस्तुत किए थे। विद्वानों के समक्ष जब विवेकानंद जी ने अपने हृदय को खोलते हुए पूरे मन से कहा मेरे अमेरिकी भाइयों और बहनों। इस शब्द ने जिस आत्मीयता का बोध कराया, जिस अपनेपन का एहसास कराया, वह वहां उपस्थित मनीषियों के लिए एक नई बात थी। उन्होंने इस प्रकार की कल्पना भी नहीं की और ना उनके दर्शन में ऐसा था। विवेकानंद की वाणी सबके हृदय को छूने वाली थी, सब सबके हृदय में हृदयंगम होने वाली थी। इसीलिए प्रारंभिक शब्दों को सुनने के बाद पूरा सभागार तालियों की गड़गड़ाहट से गुंजायमान हो गया। इन तालियों में ही स्वामी विवेकानंद जी को जितना समय दिया गया था, वह समय निकल गया, लेकिन स्वामी विवेकानंद जी के विचारों को सुनकर वहां उपस्थित प्रबुद्ध वर्ग ने स्वामी विवेकानंद जी को और ज्यादा समय देने को कहा। उसके बाद स्वामी विवेकानंद जी ने भारतीय दर्शन पर आधारित भारतीय संस्कारों से समाहित ऐसा प्रबोधन दिया, जो सबके लिए नया था। यही भारतीय संस्कृति का स्वरूप है। उस समय संपूर्ण विश्व के मनीषियों ने यह स्वीकार किया कि वास्तव में भारत ज्ञान के मामले में विश्व गुरु है।

शिकागो व्याख्यान के प्रारंभ में स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था आपने जिस स्नेह के साथ मेरा स्वागत किया है उससे मेरा दिल भर आया है। मैं दुनिया की सबसे पुरानी संत परंपरा और सभी धर्मों की जननी की तरफ से आप सभी को धन्यवाद देता हूं। सभी जातियों, संप्रदायों के लाखों करोड़ों हिंदुओं की तरफ से आपका आभार व्यक्त करता हूं। अपने व्याख्यान में स्वामी विवेकानंद जी कहते हैं जिस तरह अलग-अलग जगहों से निकली नदियां अलग-अलग रास्तों से होकर आखिरकार समुद्र में मिल जाती हैं। ठीक उसी तरह मनुष्य अपनी इच्छा से अलग-अलग रास्ते चुनता है। यह रास्ते देखने में भले ही अलग-अलग लगते हों, लेकिन यह सब ईश्वर तक ही जाते हैं। इसलिए कहा जा सकता है कि विश्व के सभी धर्मों की एक ही उपयुक्त राह है कि हम ईश्वर की प्राप्ति में लग जाएं।

स्वामी विवेकानंद जी की वाणी भारतीयता से ओतप्रोत थी। विवेकानंद जी जब भी बोलते थे, उनके एक एक शब्द में भारत का प्रस्फुटन होता था। वे निश्चित रूप से उस भारतीय संस्कृति के संवाहक थे, जो समस्त विश्व के दिशादर्शक हैं। तभी तो वे कहते थे कि भारतीय संस्कृति केवल भारत के लिए ही नहीं, बल्कि वैश्विक प्रगति का आधार है। वर्तमान समय में भी स्वामी विवेकानंद जी विचार उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने पुरातन काल में होते थे। स्वामी जी युवाओं को शक्तिशाली बने रहने का भी उपदेश देते थे। उनका मानना था कि जिस देश का युवा निर्बल और शक्तिहीन होगा, वह राष्ट्र कभी शक्ति संपन्न नहीं हो सकता।

हिंदुत्व के बारे में स्वामी विवेकानंद जी की स्पष्ट धारणा थी। वे अपनी वाणी के माध्यम से यह भी कहते थे कि तुम तब और केवल तब ही हिन्दू कहलाने के अधिकारी हो, जब इस नाम को सुनने मात्र से तुम्हारे शरीर में विद्युत प्रवाह की तरह तरंग दौड़ जाए और हर व्यक्ति सगे से भी ज्यादा पसंद आने लगे। स्वामी विवेकानंद जी सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार की तरह ही देखते थे। शिकागो में स्वामी विवेकानंद जी का प्रबोधन इसी भाव धारा का प्रवाहन था। जिसकी गूंज आज भी ध्वनित होती रहती है।

"स्वामी विवेकानंद का शिकागो व्याख्यान भारत के लिए ही नही, बल्कि विश्व के युवाओं के लिए एक ऐसा पाथेय है, जिस पर चलकर जहां व्यक्ति स्वयं को शक्तिशाली बना सकता है, वहीं अपने राष्ट्र को भी मजबूती दे सकता है। स्वामी विवेकानंद जी के आदर्श वाक्यों को आत्मसात करके हम उस दिशा में तीव्र गति से जा सकते हैं, जहां से स्वर्णिम भारत की किरणों का उदय होता है।

स्वामी विवेकानंद जी ने भारत के बारे में तीन अति महत्व की भविष्यवाणी की थीं। 1890 के दशक में उन्होंने कहा था कि भारत अकल्पनीय परिस्थितियों के बीच अगले 50 वर्षों में ही स्वाधीन हो जाएगा। जब उन्होंने यह बात कही तब कुछ लोगों ने इस पर ध्यान दिया। उस समय ऐसा होने की कोई संभावना भी नहीं दिख रही थी। ऐसी पृष्ठभूमि में स्वामी विवेकानंद जी की यह सत्य सिद्ध दी हुई। विवेकानंद ने ही एक और भविष्यवाणी की थी जिसका सत्य सिद्ध होना शेष है। उन्होंने कहा था भारत एक बार फिर समृद्धि तथा शक्ति की महान ऊँचाइयों पर उठेगा और अपने समस्त प्राचीन गौरव को पीछे छोड़ जाएगा।

स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि अतीत से ही भविष्य बनता है। अतः यथासंभव अतीत की ओर देखो और उसके बाद सामने देखो और भारत को उज्ज्वल तक पहले से अधिक पहुंचाओ। हमारे पूर्वज महान थे। हम भारत के गौरवशाली अतीत का जितना ही अध्ययन करेंगे हमारा भविष्य उतना ही उज्ज्वल होगा। भारत में श्रीराम, कृष्ण, महावीर, हनुमान तथा श्री रामकृष्ण जैसे अनेक ईष्ट और महापुरुषों के आदर्श उपस्थित हैं। महापुरुषों में संपूर्ण समाज का भला करने की नीति का ही पालन किया। स्वामी जी एक कथन बहुत ही प्रचलित है उतिष्ठत जागृत, प्राप्य वरान्निबोधत। अर्थात उठो जागो और लक्ष्य प्राप्ति तक रुको मत। यह कथन जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बहुआयामी प्रगति का मार्ग तैयार करेगा।

स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि धर्म को हानि पहुंचाए बिना ही जनता की उन्नति की जा सकती है। किसी को आदर्श बना लो, यदि तुम धर्म को फेंक कर राजनीति, समाजनीति अथवा अन्य किसी दूसरी नीति को जीवन शक्ति का केंद्र बनाने में सफल हो जाओ तो उसका फल यह होगा कि तुम्हारा अस्तित्व नहीं रह जाएगा। भारत में हजारों वर्षों से धार्मिक आदर्श की धारा प्रवाहित हो रही है। भारत का वायुमंडल इस धार्मिक आदर्श से शताब्दी तक पूर्ण रह कर जगमगाता रहा है। हम इसी धार्मिक आदर्श के भीतर पैदा हुए और पले हैं। यहां तक कि धर्म हमारे जन्म से ही हमारे रक्त में मिल गया है, जीवन शक्ति बन गया है। यह धर्म ही है जो हमें सिखाता है कि संसार के सारे प्राणी हमारी आत्मा के विविध रूप ही हैं। सच्चाई यह भी है कि हमारे लोगों ने धर्म को समाज में सही रूप में उपयोग भी नहीं किया है। अतः भारत में किसी प्रकार का सुधार या उन्नति की चेष्टा करने के पहले धर्म को अपनाने की आवश्यकता है। भारत को राजनीतिक विचारों से प्रेरित करने के पहले जरूरी है कि उसमें आध्यात्मिक विचारों की बाढ़ ला दी जाए।

शिक्षा हमारी मूलभूत आवश्यकता है। भारत के लोगों को यदि आत्मनिर्भर बनने की शिक्षा नहीं दी जाएगी, तो सारे संसार की दौलत से भारत के एक छोटे से गांव को भी सहायता नहीं की जा सकती। नैतिक तथा बौद्धिक दोनों ही प्रकार की शिक्षा प्रदान करना हमारा पहला कार्य होना चाहिए। शिक्षा के माध्यम से भारत का स्वत्व प्रकट होना चाहिए, भारत के संस्कार प्रवाहित होने चाहिए। कहा जाता है कि जिस देश की शिक्षा में वहां के तत्व नहीं हैं तो वह शिक्षा उस देश के स्वत्व को समाप्त करने का मार्ग ही तैयार करेगी। इसलिए भारत को सर्वांगीण विकास करने वाली शिक्षा देने का प्रयास करना चाहिए।

राष्ट्रभक्तों की टोलियों पर स्वामी विवेकानंद ने कहा है देशभक्त बनो। इन बातों से युक्त विश्वासी युवा देशभक्तों की आज भारत को आवश्यकता है। स्वामीजी का स्वप्न था कि उन्हें 1000 तेजस्वी युवा मिल जाएं तो वह भारत को विश्व शिखर पर पहुंचा सकते हैं। मेरा विश्वास युवा पीढ़ी, नई पीढ़ी में है। मेरे कार्यकर्ता इनमें से आएंगे और वह सिंहों की भांति समस्याओं का हल निकालेंगे। ऐसे युवाओं में और किसी बात की जरूरत नहीं है। बस केवल प्रेम, सेवा, आत्मविश्वास, धैर्य और राष्ट्र के प्रति असीम श्रद्धा होनी चाहिए।

नारी जागरण पर स्वामी विवेकानंद कहते हैं स्त्रियों की पूजा करके ही सभी राष्ट्र बड़े बने हैं। जिस देश में स्त्रियों की पूजा नहीं होती, वह देश या राष्ट्र कभी बड़ा नहीं बन सका है और भविष्य में कभी बड़ा भी नहीं बन सकेगा। हम देख रहे हैं कि नौ देवियों लक्ष्मी और सरस्वती को मां मानकर पूजने वाले सीता जैसे आदर्श की गाथा घर-घर में गाने वाले यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता को हृदय में बसाने वाले भारत में नारी को यथोचित सम्मान प्राप्त नहीं है। हमारी मानसिकता बदल रही है किंतु उसकी गति बहुत धीमी है, यदि हम देश की तरक्की चाहते हैं तो सबसे पहले अपनी सोच को बदल कर नारी जागरण और उत्कर्ष पर चिंतन और त्वरित क्रियाशीलता दिखानी भी होगी। ग्रामीण आदिवासी स्त्रियों की वर्तमान दशा में उद्धार करना होगा, आम जनता को जगाना होगा, तभी तो भारत वर्ष का कल्याण होगा। स्वामी विवेकानंद का शिकागो व्याख्यान भारत के लिए ही नही, बल्कि विश्व के युवाओं के लिए एक ऐसा पाथेय है, जिस पर चलकर जहां व्यक्ति स्वयं को शक्तिशाली बना सकता है, वहीं अपने राष्ट्र को भी मजबूती दे सकता है। स्वामी विवेकानंद जी के आदर्श वाक्यों को आत्मसात करके हम उस दिशा में तीव्र गति से जा सकते हैं, जहां से स्वर्णिम भारत की किरणों का उदय होता है।

(लेखिका शिक्षाविद एवं साहित्यकार हैं)

राजनीतिक तरकस
देश का सबसे तेज साप्ताहिक
समय से संवाद
वर्ष : 07 , अंक : 05, नई दिल्ली, बुधवार, 28 अक्टूबर, 2022

'सनराइज ओवर अयोध्या' धर्मनिरपेक्षता का आह्वान

नीलम महाजन सिंह

भारतीय संविधान में धर्म निरपेक्षता एक महत्त्वपूर्ण स्तंभ है। फिर भी समय-समय पर धार्मिक उन्माद होते रहते हैं। इसका कारण कट्टरता तथा असहिष्णुता है। भारत मूलतः धर्मनिरपेक्षता का अंतर्राष्ट्रीय उदाहरण है। इसी विषय पर सलमान खुर्शीद की पुस्तक 'सनराइज ओवर अयोध्या' का विशेष महत्व है। सलमान ने सभी को अपने धर्म को सहजता से अनुसरण करने की अपील की है। मैं सेंट स्टीफंस कॉलेज के दिनों से, बैरिस्टर सलमान खुर्शीद से परिचित हूँ। सलमान मुझसे कुछ साल बड़े थे लेकिन वह अक्सर कैफे आया करते थे। वह डॉ. शशि थरूर, परवेज दीवान आदि के समकालिक साथी हैं। सलमान के साथ अपने जुड़ाव के तीन दशकों में, मुझे हमेशा उन पर गर्व महसूस हुआ है। सलमान खुर्शीद भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन के पोते और श्री खुर्शीद आलम खान, पूर्व कैबिनेट मंत्री, के पुत्र हैं।सलमान खुर्शीद, वरिष्ठ अधिवक्ता और प्रख्यात लेखक हैं। वह भारत के विदेश मंत्रालय रह चुके हैं। सलमान खुर्शीद फरुर्खाबाद लोकसभा का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। वह जून 1991 में केंद्रीय उप वाणिज्य मंत्री बने। सलमान खुर्शीद ने अपने राजनीतिक जीवन की शुरूआत 1981 में प्रधान मंत्री कार्यालय में ओ.एस.डी. के रूप में प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी के साथ की। वह दो बार उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रह चुके हैं। वह दिल्ली पब्लिक स्कूल सोसाइटी के अध्यक्ष और डॉ. जाकिर हुसैन स्टडी सर्कल और मदर टेरेसा मेमोरियल ट्रस्ट/मदर टेरेसा फाउंडेशन के संरक्षक भी हैं। 'सनराइज ओवर अयोध्या'; सलमान खुर्शीद द्वारा लिखित पुस्तक को मैंने गहनता से पढ़ा है। 'सनराइज ओवर अयोध्या; दी नेशनहुड इन आवर टाइम्स'; पेंगुइन रैंडम हाउस द्वारा प्रकाशित है। उन्होंने 'आर.एस.एस. और हिंदुत्व की विचारधारा पर कटाक्ष किया है। ये पुस्तक मुझे सरवानन सुंदरमूर्ति (आई. आई.टी. शिक्षाविद्) द्वारा भेंट की गई है। एक संदेश के साथ; 'प्रिय नीलम, आपकी मुस्कान के लिए, मीलों की ऊंचाई तक जाने के लिए, आपके दोस्त मिस्टर सलमान खुर्शीद के लिए ङ्ख खुशियाँ फैलाने के लिए'! पुस्तक के पृष्ठ 113, मे 'दी सैफ्रन स्काई' में हिंदुत्व की तुलना आई.एस.आई.एस. और 'बोको हराम' से की है ' 'जो भी युक्तिकरण की पेशकश की गई हो, अयोध्या की गाथा एक धर्म के दौरान दूसरे की पद्धति को रौंदने के बारे में थी। लेकिन पूर्व धर्म स्वयं व्याख्या की प्रतियोगिता का अनुभव कर रहा था। संतों और संतों के लिए जाने वाले सनातन धर्म और शास्त्रीय हिंदू धर्म को हिंदुत्व के मजबूत संस्करण से अलग रखा गया था। हाल के वर्षों के आई. एस.आई.एस. और बोको हराम जैसे समूहों के जिहादी इस्लाम के समान एक राजनीतिक संस्करण है। चूंकि राजनीतिक सामग्री स्पष्ट थी, इसलिए चुनाव अभियानों में भी इस शब्द को अनिवार्य रूप से जगह मिली है। एक बार ऐसा चुनाव सुप्रीम कोर्ट तक गया, जहां जस्टिस जे. एस. वर्मा ने अन्य बातों के साथ-साथ चुनावी उद्देश्यों के लिए धर्म के इस्तेमाल के संदर्भ में 'हिंदुत्व' शब्द पर विचार किया। इसे संदेह का लाभ दिया, 'सलमान खुर्शीद लिखते हैं।आई.एस.आई. एस. क्या है? (इस्लामिक स्टेट ऑफ इराक एंड सीरिया), जिसे आई.एस. आई.एल. (इस्लामिक स्टेट ऑफ इराक एंड द लेवेंट) के नाम से भी जाना जाता है। यह एक सुन्नी जिहादी समूह है जिसकी विशेष रूप से हिंसक विचारधारा है जो खुद को 'खलिफात' कहते हैं तथा सभी मुसलमानों पर धार्मिक अधिकार का दावा करते हैं। यह 'अल कायदा' से प्रेरित था लेकिन बाद में सार्वजनिक रूप से इससे निष्कासित कर दिया गया था। 'बोको हराम' क्या है? 'बोको हराम', आधिकारिक तौर पर जमात-अहल के रूप में सुन्नत-दावा-वाल-जिहाद के रूप में जाना जाता है। यह पूर्वोत्तर नाइजीरिया में स्थित एक आतंकवादी संगठन है, जो चाड, नाइजर और उत्तरी कैमरून में भी सक्रिय है। 2016 में, यह समूह विभाजित हो गया था, जिसके परिणामस्वरूप इस्लामिक स्टेट के पश्चिम अफ्रीका प्रांत के रूप में जाना जाने वाला एक शत्रुतापूर्ण गुट का उदय हुआ, जिसकी स्थापना 2002 में मोहम्मद यूसुफ द्वारा, मैदुगुरी, नाइजीरिया में की गई थी। सलमान एक विद्वान राजनेता हैं, जिन्होंने सेंट स्टीफंस कॉलेज और ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से पढ़ाई की है। सलमान खुर्शीद की पुस्तक के मुख्य पहलू हैं: 'एट होम इन इंडिया', 'ट्रिपल तलाक', 'द इनविज़िबल मुस्लिम'। वह रोनाल्ड डवर्किन के कानूनी और राजनीतिक दर्शन में डिग्निटी के सह-संपादक हैं। उन्होंने एक नाटक 'सन्स ऑफ बाबर' लिखा है। मेरा विश्लेषणः- सलमान खुर्शीद की पूरी तरह से धर्मनिरपेक्ष साख है। उनका पसंदीदा कथन है, 'न ही तुम मेरी उपासना के उपासक होगे, क्योंकि तुम्हें तुम्हारा धर्म है और मेरे लिए मेरा धर्म।' सूराह-अल-काफिरुन (कुरान) । क्या मैं यह सकती हूं कि राम मंदिर

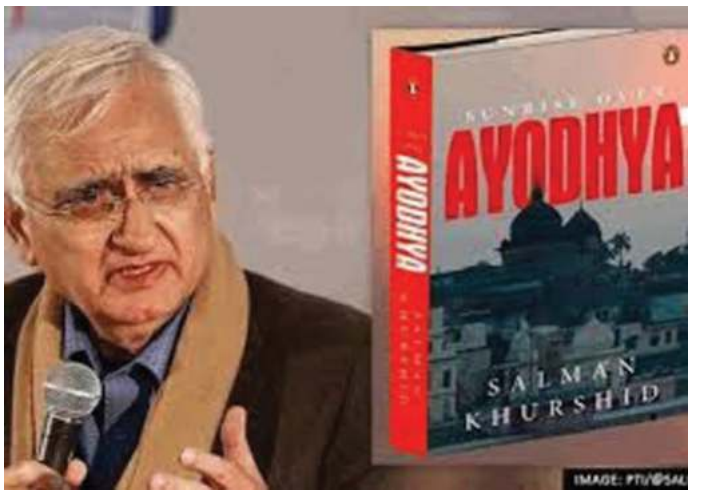

"भारतीय संविधान में धर्म निरपेक्षता एक महत्त्वपूर्ण स्तंभ है। फिर भी समय-समय पर धार्मिक उन्माद होते रहते हैं। इसका कारण कट्टरता तथा असहिष्णुता है। भारत मूलतः धर्मनिरपेक्षता का अंतर्राष्ट्रीय उदाहरण है। इसी विषय पर सलमान खुर्शीद की पुस्तक 'सनराइज ओवर अयोध्या' का विशेष महत्व है। सलमान ने सभी को अपने धर्म को सहजता से अनुसरण करने की अपील की है।

के दरवाजे प्रधानमंत्री राजीव गांधी के गृह मंत्री अरुण नेहरू द्वारा खोले गए थे? बाबरी मस्जिद विध्वंस, कांग्रेस शासन के दौरान हुआ, जबकि पी. वी. नरसिम्हा राव भारत के प्रधान मंत्री थे। नरसिम्हा राव स्वयं हिंदुत्व के प्रति नरम थे और आर.एस.एस. या विहिप के समर्थक थे। सत्ताधारी कांग्रेस पार्टी मूकदर्शक क्यों थी? सलमान ने खुद अपनी किताब में लिखा है कि भारत के सर्वोच्च न्यायालय में राम जन्मभूमि का मुद्दा आया परंतु अब तो राम मंदिर निमार्णाधीन है'। आर. एस.एस. और भाजपा कार्यकताओं ने सलमान खुर्शीद के नैनीताल के घर में आग लगा दी। सलमान खुर्शीद को प्रियंका गांधी वाड्रा और राहुल गांधी द्वारा हिंदुत्व की स्वीकृति का उल्लेख करना चाहिए था, जो खुद अयोध्या में राम मंदिर का दौरा कर रहे हैं। अरविंद केजरीवाल ने सभी दिल्ली-वासियों को अयोध्या में मुफ्त दर्शन देने की घोषणा की है। सलमान खुर्शीद दिल्ली और ऑक्सफोर्ड में अपने छात्र जीवन से ही नाटकों में लेखन और अभिनय में गहराई से शामिल रहे हैं। वह 'सन्स ऑफ बाबर', नाटक के लेखक हैं; जिसे रूपा एंड कंपनी द्वारा प्रकाशित किया गया है, जिसमें टॉम ऑल्टर, दिल्ली के लाल किले में मुख्य भूमिका में हैं। सलमान खुर्शीद 1990 में प्रकाशित 'द कंटेम्परारी कंजर्वेटिवः सिलेक्टेड राइटिंग्स ऑफ धीरेन भगत' के संपादक रह चुके हैं। उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ में जन्मे, वह पठान वंश के हैं, जो आफरीदी हैं। सलमान खुर्शीद ने सेंट जेवियर्स हाई स्कूल, पटना, दिल्ली पब्लिक स्कूल, मथुरा रोड से पढ़ाई की। उन्होंने बी.ए. (इंग्लिश ऑनर्स) सेंट स्टीफंस कॉलेज, दिल्ली से और बाद में ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के सेंट एडमंड हॉल में एम.ए. 'बैचलर ऑफ सिविल लॉ' किया। उन्होंने ऑक्सफोर्ड के ट्रिनिटी कॉलेज में कानून में व्याख्याता के रूप में भी पढ़ाया। 'सनराइज ओवर अयोध्या' सलमान खुर्शीद के धर्मनिरपेक्ष-वाद-विवाद को पूर्ण विराम देने की पक्षधर है, ताकि सभी भारत में एकजुट होकर रह सकें।

GMDC लिमिटेड ने दिल्ली में अपना क्षेत्रीय कार्यालय खोला

रेजिडेंट कमिश्नर श्रीमती आरती कंवर द्वारा नए कार्यालय का उद्घाटन

सवांददाता

गुजरात खनिज विकास निगम लिमिटेड (GMDC) ने नई दिल्ली में अपना क्षेत्रीय कार्यालय खोला है। श्रीमती आरती कंवर, रेजिडेंट कमिश्नर, गुजरात सरकार ने आज बाबा खड़ग सिंह मार्ग पर इस कार्यालय का उद्घाटन किया। दिल्ली में जीएमडीसी लिमिटेड का क्षेत्रीय कार्यालय खोलने की पहल इसके प्रबंध निदेशक श्री रूपवंत सिंह, क्अर ने की थी। गुजरात सरकार के स्वामित्व वाली खनन कंपनी ऋटउ्ठ पिछले छह दशकों से हाई-क्वॉलिटी मिनरल की माइनिंग और प्रोसेसिंग का काम कर रही है। यह कंपनी थर्मल, पवन और सौर उर्जा के उत्पादन का काम भी करती है। यह जीरो-डेट कंपनी (जिस कंपनी पर कोई ऋण बकाया ना हो) साल 2017 में भारत की फॉर्च्यून 500 कंपनियों (2017) में 132 वें स्थान पर थी। इसे मार्केट कैपिटलाइजेशन द्वारा माइनिंग सेक्टर में शीर्ष-5 संगठनों में शामिल किया गया था।

GMDC, भारत की दूसरी सबसे बड़ी लिग्नाइट उत्पादक कंपनी है और यह गुजरात में लिग्नाइट एक्प्लोरेशन और सप्लाई में सबसे आगे है। गुजरात के लिग्नाइट समृद्ध इलाकों में खनन किया जाता है और फिर इसे हाई-ग्रोथ इंडस्ट्री जैसे टेक्सटाइल, कैमिकल,

सिरामिक, ईंट उद्योग और कैप्टिव पावर को सप्लाई किया जाता है।

GMDC Ltd. भविष्य में अपना विस्तार करने के लिए पूरी तरह तैयार है। इसके एक हिस्से के रूप में कंपनी ने कुछ नई खदानों, खनिज लाभकारी संयंत्रों और अन्य परियोजनाओं की शुरूआत की है। इन परियोजनाओं को तेजी से ट्रैक करने के लिए, भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों और प्राधिकरणों से समय पर क्लियरेंस, अप्रूवल और परमिशन की आवश्यकता है। नई दिल्ली में अपने नए क्षेत्रीय कार्यालय की स्थापना करके GMDC लिमिटेड इस उद्देश्य को पूरा करने के तत्पर है।

राजनीतिक तरकस
देश का सबसे तेज साप्ताहिक
समय से संवाद
7
वर्ष : 07 , अंक : 05, नई दिल्ली, बुधवार, 28 अक्टूबर, 2022

क्या जदयू को समाप्त करने पर कार्य कर रहे हैं नीतीश कुमार?

अर्जुन देशप्रेमी

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने जिस तरह से पाला बदलकर आरजेडी के साथ सरकार बनाई है, उसने अनेक सवालों को पैदा कर दिया है। इन्हीं में से एक सवाल है कि क्या नीतीश कुमार अपनी ही बनाई हुई नाव को डुबोने पर तुले हुए हैं? क्या उनकी मंशा अपनी पार्टी को अपने साथ ही लेकर जाने की है जिससे भविष्य में जदयू का कोई नाम लेवा ना बच जाए। जदयू में जो भी लोग हैं, अगर उनकी बातों पर गौर करें तो ये सारी चीजें सामने आती है और अंततोगत्वा यही लगता है सचमुच नीतीश कुमार अपनी पार्टी को अपने ही साथ समाप्त कर देना चाहते हैं।

मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि एक पत्रकार के रूप में मैं नीतीश कुमार के अनेक कार्यों का समर्थक रहा हूं। मेरा अभी भी मानना है कि नीतीश कुमार ने जो काम किए हैं, उन कार्यों से बिहार को काफी बल मिला है, फायदा मिला है। मेरा यह भी मानना है कि नीतीश कुमार ने अपने कार्यकाल में जो काम किए, वे ठीक थे। उन्होंने न सिर्फ. भिहार को जंगलराज से उबारा, वरण विकास की ओर ले गए। बिहार के तीव्र गति से उड़ान भरने के लिए पिछले ५ वर्षों में एक नया लॉचिंग पैड तैयार हो गया था जिसकी वदौलत ऐसा लग रहा था कि एक दो वर्षों में बिहार में व्यापक निवेश होगा। पर जिस तरह से नीतीश कुमार ने पलटी मारी है, उससे ऐसा लग रहा है कि अब सबपर विराम लग जाएगा क्योंकि लालू प्रसाद के पुत्रों, तेजस्वी यादव और त्तेजप्रताप के साथ मिलकर जो सरकार जदयू और आरजेडी की बनी है, उसके बनते ही जंगलराज का भय लोगों में एक बार फिर घर करने लगा है।

नीतीश कुमार के द्वारा पिछले एक डेढ़ साल के दौरान उनके द्वारा उठाए गए कदमों के बारे में बात करें तो ऐसा लगने लगा है कि या तो नीतीश कुमार अब चुकने लगे हैं, या वह सिर्फ और सिर्फ स्वयं तक सीमित होकर रह गए हैं। ऐसा यदि ऐसा है तो यह बिहार के लिए दुर्भाग्य से कम नहीं है। नीतीश कुमार से जितनी आशाएं लोगों ने लगा रखी थी, वह उन पर शायद अब तुषारापात हो जाए।

नीतीश कुमार के कदमों की बात करें तो ऐसा लगता है कि उनको शायद किसी पर भरोसा नहीं है और ना ही वह किसी को पार्टी के भीतर आगे बढ़ने देना चाहते हैं। जब वह उम्र के अंतिम पड़ाव की ओर अग्रसर हो रहे हैं, उस दौरान पार्टी के भीतर कोई एक ऐसा नहीं है जो पूरी तरह से सर्वमान्य हो, और जिस पर नीतीश कुमार को पूरा भरोसा हो जो आगे चलकर पार्टी को नई दिशा दे सके और पार्टी उस व्यक्ति के पीछे खड़ी हो सके। इसको आप पार्टी के उत्तराधिकार से भी जोड़कर देख सकते हैं। नीतीश कुमार कि इस बात के लिए तारीफ की जाती है और की भी जानी चाहिए कि उन्होंने परिवार वालों को कभी भी पार्टी पर हावी नहीं होने दिया और ना ही पार्टी को परिवारवादी पार्टी बनने दिया। यह बहुत अच्छी बात है। पर इसके साथ में ही नीतीश कुमार ने जिस तरह से पार्टी में किसी को उत्तराधिकारी के रूप में विकसित नहीं होने दिया, वह चिंताजनक है। (उत्तराधिकारी का मतलब परिवारवाद से उपजा हुआ व्यक्ति नहीं बल्कि पार्टी में अपने कार्यों की बदौलत, अपनी मेहनत के बदौलत, अपने ज्ञान की बदौलत, अपनी क्षमता के बदौलत कोई आगे आया हो, जिसे पार्टी के भीतर स्वीकार्यता मिली हो और यह माना जाता है कि नीतीश कुमार जी के जाने के बाद इन्हीं लोगों में से कोई एक आदमी पार्टी को संभालेगा और पार्टी को और मजबूती देगा)। ऐसे में फिर वही सवाल है कि नीतीश के बाद कौन? अगर कोई नहीं तो पार्टी का क्या होगा?

बार बार पलटी मारने की उनकी नीति से आम जनता के बीच जदयू और नीतीश कुमार दोनों की छवि खराब हुई है। पार्टी और नीतीश कुमार दोनों की विश्वसनीयता पर चोट पहुँची है। लोगों को लगाने लगा है की नीतीश कुमार दगाबाज है, विश्वासघाई हैं। लोग कहने लगेगे हैं कि नीतीश कुमार का तो इतिहास ही धोखाधड़ी का रहा है। नैतिकता के धरातल पर वह फेल हुए हैं।

उन्होंने एक के बाद एक उन्हीं लोगों को धोखा दिया, उन्हीं लोगों को किनारे किया जिन लोगों ने नीतीश कुमार को या तो आगे बढ़ाया या जो इनके साथ कदम से कदम मिलाकर चलते रहे। सबसे पहले उदाहरण है लालू प्रसाद।लालू प्रसाद आज भले ही सजायफ़्ता मुजरिम हैं, जेल में रहे है, घोटालेबाज रहे हैं, पर सच यह भी है कि उन्हीं के सानिध्य में नीतीश कुमार आगे बढ़े हैं।लालू प्रसाद यादव ने नीतीश कुमार को आगे बढ़ाया और जब चारा घोटाले में लालू प्रसाद फँसते दिखे तो नीतीश कुमार ने लालू प्रसाद के खिलाफ मोर्चा खोल दिया। या यूं कहिए कि नीतीश कुमार ने लालू प्रसाद को धोखा दिया। जदयू के दूसरे नेताओं के लिए जिस तरह धोखा देने की बात नीतीश कुमार कहते हैं, उसी तरह से तो नीतीश कुमार ने भी धिक दिया न? पूर्व में नीतीश कुमार कहते रहे हैं कि उन्हें शरद यादव ने धोखा दिया, ललन सिंह ने धोखा दिया, उपेंद्र कुशवाहा ने धोखा दिया। और अब कह रहे हैं कि कि आरसीपी सिंह ने धिखा दिया। तो इन्हीं मनकों पर क्यों न माना जाए कि नीतीश कुमार ने तब लालू प्रसाद को धोखा दिया। और इन्हीं मनकों पर क्यों न माना जाए की नीतीश कुमार ने एक के बाद एक कर पहले जार्ज फर्नांडिस को धोखा दिया, फिर दिग्विजय सिंह को धोखा दिया, शरद यादव को धोखा दिया, ललन सिंह को ठिकाने लगाया, उपेंद्र कुशवाहा को किनारे लगाया, और अब उन्होंने अपनी ही पार्टी के पूर्व अध्यक्ष जिसे उन्होंने स्वयं अध्यक्ष बनाया था, आरसीपी सिंह को भी धोखा दिया है। इस तरह से इस तरह से देखें तो फिर नीतीश कुमार में नैतिकता कहीं नहीं दिखती है। खासकर अपने ही साथियों को धोखा देने के मामले में।

“ बार बार पलटी मारने की नीतीश कुमार की नीति से आम जनता के बीच जदयू और नीतीश कुमार दोनों की छवि खराब हुई है। पार्टी और नीतीश कुमार दोनों की विश्वसनीयता पर चोट पहुँची है। लोगों को लगाने लगा है की नीतीश कुमार दगाबाज है, विश्वासघाई हैं। लोग कहने लगेगे हैं कि नीतीश कुमार का तो इतिहास ही धोखाधड़ी का रहा है। नैतिकता के धरातल पर वह फेल हुए हैं।

नीतीश कुमार किसी पर विश्वास नहीं करते। उनको जैसे ही लगता है कि किसी का कद बढ़ रहा है, वह उसको किनारे कर देते हैं या ऐसी स्थिति उत्पन्न करा देते हैं जिससे दूसरा व्यक्ति स्वयं ही पार्टी छोड़ जाए। जितने नेताओं के नाम ऊपर दिए गए हैं, उन सभी पर यह बात लागू होती है। इसी कारण पार्टी में नीतीश कुमार के बाद दूसरी पंक्ति के नेता उभरकर नहीं आ पाए। तो फिर पार्टी को आगे कौन ले जाएगा?

अब बात करें जनता दल यूनाइटेड के भविष्य को लेकर। साफ दिख रहा है कि जिस तरह से नीतीश कुमार ने जनादेश का अपमान किया है, जनता के साथ विश्वासघात किया है और एक बार नहीं, कई बार पाला बदला है, उससे जो विश्वसनीयता का संकट उत्पन्न हुआ है। नीतीश कुमार किस तरह से लोगों को विश्वास दिलाएँगे कि उन्होंने भ्रष्टाचार के साथ समझौता नहीं किया है? साफ साफ दिख रहा है कि उन्होंने भ्रष्टाचार में लिप्त सजायाफ्ता लालू प्रसाद यादव की पार्टी से समझौता किया है। तेजस्वी यादव और तेज प्रताप यादव पर भी मुकदमों की लाइन लगी हुई है। सम्भव है कि आने वाले कुछ समय में यह दोनों नेता जेल में हों इसी तरह से आरजेडी के अनेक नेता अनेक अपराधों में लिप्त रहे हैं और उन पर मुकदमा की अच्छी खासी संख्या है। जो लोग आरजेडी के नेताओं, खासकर लालू प्रसाद और उनके परिवार के भ्रष्टाचार तथा अराजकता से तंग आकर नीतीश कुमार के साथ आए थे, वह लोग कैसे विश्वास कर लेंगे कि नीतीश कुमार ने भ्रष्टाचारियों और अपराधियों के साथ समझौता नहीं किया है? जनता कैसे मान लेगी कि दोबारा से आरजेडी के राज में जंगलराज कायम नहीं होगा?

एक बात साफ दिख रही है कि जैसे ही नीतीश कुमार ने भाजपा का साथ छोड़कर आरजेडी का दामन थामा है, निवेशकों ने बिहार में निवेश की अपनी रुचि घटानी शुरू कर दी है। आम बातचीत में वह साफ-साफ निवेशक स्वीकार करते हैं कि आने वाले समय में बिहार की स्थिति फिर से लालू राज के जंगलराज काल के जैसी ही हो सकती है। ऐसे में अभी बिहार में निवेश करना उचित नहीं होगा। हजारों हजार करोड़ के निवेश के जो सपने पिछले कुछ समय से दिखने शुरू हुए थे, उन पर अचानक से विराम भी लग रहा है। एक तरफ जहां 20 लाख नौकरियां देने की बात हो रही है, वही नौकरी मांगने वालों पर भयंकर लाठी चार्ज हो रहा है। इससे साफ साफ दिख रहा है कि किसी भी सूरत में बिना निवेश के नीतीश कुमार की सरकार बिहार में 20 लाख लोगों को नौकरियां तो नहीं दे पाएगी।आमतौर पर यह धारणा भी बनती जा रही है कि केंद्र जो पैसे बिहार में लगा रहा था, उसमें भी फिलहाल टालमटोल हो सकती है या उसमें देरी होने लगेगी क्योंकि जो सामंजस्य केंद्र और राज्य की सरकार के बीच अब तक था, वह भी अब खटास में पड़ता दिख रहा है। ऐसे में बिहार से पलायन की रफ्तार और बढ़ेगी। और ऐसा होता है तो फिर जनता के मन में नीतीश कुमार के प्रति गुस्सा भी बढ़ता चला जाएगा। इससे जनता दल यूनाइटेड का वोटर बड़ी संख्या में नीतीश कुमार और जदयू से विमुख होगा और संभव है कि यह आगे चलकर और तेजी से बढ़े जिसमें जनता दल यूनाइटेड की साख और खत्म हो और पार्टी सिमटती हुई चली जाए।

बार-बार कहा जा रहा है कि जनता दल यूनाइटेड का विलय राजद में होना है। यह भी साफ दिखता है क्योंकि नीतीश कुमार पार्टी के मामले में जिस तरह के ढुलमुल रुख अख्तियार कर रहे हैं, उससे पार्टी सिमटती जा रही है। जनता दल यूनाइटेड का वोटर ना तो मुस्लिम है, ना यादव, नाही फॉरवर्ड वर्ग। जदयू का कोर वोटर कोईरी, कुर्मी और अन्य पिछड़ी जातियां हैं। फारवर्ड जहां भारतीय जनता पार्टी के साथ हैं, वही माई समीकरण के तहत मुस्लिम और यादव पूरी तरह से आरजेडी के साथ है। ऐसे में जो मोटर जनता दल यूनाइटेड के साथ हैं, वह कोईरी-कुर्मी और अन्य पिछड़ी जातियां हैं। पर नीतीश कुमार ने अपनी पार्टी का अध्यक्ष एक भूमिहार को बनाया और भूमिहार वर्ग के वोट से जनता दल यूनाइटेड को बहुत फायदा नहीं होना है। वैसे भी यह वर्ग कम संख्या में ही जदयू को वोट करता है। दूसरी गलती इन्होंने अपनी पार्टी में जिस तरीके से लोगों को आगे बढ़ाया है, उनमें जनता के बीच में किसी का अपना जनाधार लगभग ना के बराबर है। सांगठनिक क्षमता से जुड़े लोग पार्टी में बहुत कम है। ऐसे में पार्टी के वोटरों की संख्या अगर कम होती चली गई तो पार्टी लगभग सिमट ही जाएगी।

एक और प्रासंगिक बात यह भी है कि जिस तरीके से जिस प्रकार से नीतीश कुमार ने अपने सबसे करीबी रहे आरसीपी सिंह को ठिकाने लगाया है और जिन लोगों के कहने पर लगाया है, उसमें ऐसा साफ दिखता है कि संभव है आरसीपी सिंह अपनी पार्टी बनाएं। और अगर वह अपनी पार्टी बनाते हैं तो जाहिर है वह जदयू के वोटों में ही सेंध लगाएंगे। यह भी संभव है कि जदयू का बड़ा धड़ा चुनाव के ठीक पहले आरसीपी सिंह के साथ जाए। यह भी संभव है कि आरसीपी सिंह को तब चिराग पासवान और भारतीय जनता पार्टी से भी सहयोग मिले। अगर ऐसा होता है तो आरसीपी सिंह जनता दल यूनाइटेड के वोट बैंक को अपने में मिलाने में सक्षम होंगे। यहां यह महत्वपूर्ण है कि पार्टी में जदयू में आज भी बड़ी संख्या में जो लोग संगठन के कार्यों में लगे हैं, उनकी नियुक्ति आरसीपी सिंह ने ही की थी। उनको आरसीपी सिंह ने ही आगे बढ़ाया और आज भी वह लोग भीतर भीतर आरसीपी सिंह के साथ खड़े हैं। इसका आकलन आरसीपी सिंह के बिहार में चल रहे तो दौरों में किया जा सकता है जहां अभी भी बड़ी संख्या में लोग आरसीपी सिंह के साथ खड़े दिखते हैं। बिहार विधानसभा के चुनाव में 3 साल बाकी है तो खुलकर लोग आरसीपी सिंह के साथ इसलिए भी खड़े नहीं दिख रहे हैं। उनको लगता है कि यह सही समय नहीं है। पर उनकी बातों से और उनके आचरण से ऐसा लगता है कि आने वाले समय में यह लोग पाला बदलकर आरसीपी सिंह के साथ खड़े हो जाएंगे और ऐसा होता है तो फिर जदयू के लिए एकमात्र विकल्प आरजेडी के साथ विलय ही रह जाएगा। इस तरह पार्टी पूरी तरह से समाप्त हो जाएगी। ऐसे में तो यही दिखता है कि जिस जदयू को नीतीश कुमार ने खड़ा किया वह जदयू नीतीश कुमार के साथ ही समाप्त हो जाएगी।

राजनीतिक तरकस
समय से संवाद
वर्ष : 07 , अंक : 05, नई दिल्ली, बुधवार, 28 अक्टूबर, 2022

भारतीय टीम में हरमन, वरुण और मैं बतौर ड्रैग फ्लिकर एक -दूसरे को बेहतर करने को प्रेरित करते हैं : जुगराज

सत्येन्द्र पाल सिंह

भारत के उदीय-मान ड्रैग फ्लिकर जुगराज सिंह अपने नाम राशि अपने जमाने के बेहतरीन ड्रैग फ्लिकर जुगराज सिंह की तरह अपनी एक अलग पहचान बना कर टीम के तुरुप के इक्के बनने की ओर अग्रसर हैं।

नौजवान जुगराज सिंह अभी हाल ही में बर्मिंघम राष्ट्रमंडल खेलों में ऑस्ट्रेलिया से फाइनल में 0-7 से हार दूसरे स्थान पर रही भारतीय टीम के किले के मजबूत प्रहरी थे। जुगराज का बचपन अभावों में गुजरा और उन्होंने वह दौर भी देखा जब ठीक से बमुश्किल बस एक वक्त का खाना ही मयस्सर होता था। घर चलाने के लिए बचपन में जुगराज ने अपने पिता की वाघा बॉर्डर पर पानी की बोतलें और नाश्ता बेचने में मदद की।

25 वर्षीय जुगराज सिंह ने 'हॉकी पर चर्चा' के दौरान कहा, 'हमारी हमारी भारतीय टीम में फिलहाल हरमनप्रीत सिंह, वरुण और मुझ सहित कई बेहतरीन ड्रैग फ्लिकर हैं। हमारी टीम में ड्रैग फ्लिकरों में स्वस्थ प्रतिद्वंद्विता है। भारतीय टीम में हरमन, वरुण और मैं बतौर ड्रैग फ्लिकर बराबर एक दूसरे को बेहतर करने को प्रेरित करते हैं। इससे हमें मैचों में बतौर टीम वेरिएशंस कर पाते हैं। ड्रैग फ्लिक पर वेरिएशंस खासतौर पर मुश्किल स्थिति में बहुत काम आते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि हॉकी टीम आज अपनी प्रतिद्वंद्वी टीम के ड्रैग फ्लिक रुटीन को समझने के लिए पूरी शिद्दत से कोशिश करती हैं। हम इसीलिए पेनल्टी कॉर्नर पर ड्रैग फ्लिक पर वेरिएशंस का इसलिए अभ्यास करते हैं जिससे कि हमारे प्रतिद्वंद्वी को इन पर हमारे ड्रैग फ्लिक वेरिएशंस को समझ नहीं पाए।

वह कहते हैं, ' जिंदगी में कुछ भी हासिल करने के लिए मजबूती से लड़ना चाहिए और मैं लड़ा। मैंने संघर्ष जारी रखा और कभी भी हार नहीं मानी। मुझे भारत के लिए खेलने का जो मौका मिला और मैंने मजबूत से लड़ने का लाभ उठाकर खुद को साबित किया। आज मैंने देश के सरहदी सूबे पंजाब के अटारी में जब हॉकी थामी तब मैं तीसरी कक्षा में था। मैं अपने कॉलेज के बाद चार बरस पहले मैं पंजाब नैशनल बैंक अकादमी में खेलने के लिए दिल्ली आ गया और उसने ही मुझे सबसे पहले खेलने का मौका दिया। पंजाब नैशनल बैंक की टीम की ओर से में प्रतिस्पर्द्धी टूनामेंटों में खेला ।

राष्ट्रीय स्तर के टूर्नांट में रजत पदक जीतने के बाद नौसना की टीम ने अपनी सीनियर टीम में शामिल कर लिया। इसके बाद मैं भारतीय सीनियर हॉकी टीम में एक मौके का बेताबी से इंतजार करने लगा और यह मौका हासिल करने के लिए मैंने बहुत मेहनत की। अंततः वह क्षण आया जब मुझे सीनियर भारतीय हॉकी टीम के लिए चुन गया। सीनियर भारतीय हॉकी टीम में चुना जाना मेरे लिए बड़े गौरव का क्षण था।'

ड्रैग फ्लिक पर वेरिएशंस खास तौर पर मुश्किल स्थिति में बहुत काम आते हैं। जिंदगी में कुछ भी हासिल करने के लिए मजबूती से लड़ना चाहिए। भारत के लिए खेलने का मौका मिला और मैंने खुद को साबित किया। सीनियर भारतीय हॉकी टीम में चुना जाना मेरे लिए बड़े गौरव का क्षण था। सच कहूं हॉकी खेलने ने मुझे जिंदगी बदलने में मदद की।

जुगराज सिंह पहली बार भारत की सीनियर टीम के लिए 2021-22 में एफआईएच हॉकी प्रो लीग में खेले। बेहद साधारण परिवार से आने वाले जुगराज सिंह के पिता वाघा बॉर्डर पर कुली का काम करते हैं। जुगराज अपने अब तक के इस सफर के लिए अपने पिता की कुर्बानियों का बड़ा योगदान मानते हैं। जुगराज जिंदगी के संघर्ष को बयां करते बताते हैं, 'हमारा परिवार के पास बहुत पैसा नहीं था। जब मैं बालक ही था तब मेरे पिता ही अकेले काम करते थे। बचपन में मैं और मेरा भाई वाघा बॉर्डर जा अपने पिता की यात्रियों को पानी की बोतले और नाश्ता आदि बेचने में मदद करते। हमारी आर्थिक स्थिति इतनी कमजोर थी कि हफ्ते भर रोज एक ही तरह का भोजन करना पड़ता। मैं अपने पिता का बेहद आभारी हूं कि जिन्होंने यह सुनिश्चित करने के लिए हम स्कूल जाएं बहुत दिक्कतें सही। मेरे पिता ने यह महसूस किया कि मुझे हॉकी खेलने की प्रतिभा है और उन्होंने हॉकी खेलने के लिए हमेशा मेरा हौसला बढ़ाया।

वह कहते हैं, 'बचपन में देखी इन मुश्किलों ने मुझे बतौर व्यक्ति बढ़िया ढंग से तैयार किया। मैंने हॉकी की अहमियत समझी। मैंने यह भी समझ पाया कि मैं हॉकी से मैं कैसी अपनी और अपने परिवार की जिंदगी बदल सकता हूं। अपने पिता से ही मैंने मेहनत और खुद कमाने की कीमत समझी। हॉकी खेलने से मुझे आर्थिक परेशानियों और निजी दिक्कतों से उबरने और बेहतर खिलाड़ी बनने में मदद मिली।

अब मेरे पास वह सब कुछ है जिसकी एक बालक के रूप में मैंने तमन्ना की । यह सब मेरे हॉकी खेलने के कारण ही मुमकिन हो पाया।. सच कहूं हॉकी खेलने ने मुझे जिंदगी बदलने में मदद की।'

दिल को छू जाएगी अक्षय कुमार की रक्षा बंधक, दहेज पर देती है दमदार मैसेज

क्या है कहानी

फिल्म रक्षा बंधन लाला केदारनाथ (अक्षय कुमार) की कहानी है, जो पुरानी दिल्ली के चांदनी चौक में रहता है। लाला की गोलगप्पे की पुश्तैनी दुकान है, जो दो-तीन पीढ़ियों से चली आ रही है।

लाला की दुकान के आगे प्रेग्नेंट औरतों की लंबी लाइन रहती है, जो ये मानती हैं कि इस दुकान से गोलगप्पे खाने से उनके घर पर बेटा पैदा होगा। लाला ने गुजर चुकी मां से ये वादा किया था कि वो तब ही शादी करेगा जब अपनी चारों बहनों की शादी करवा देगा। लाला की चार बहनों का किरदार सादिया खतीब, दीपिका खन्ना, स्मृति श्रीकांत और सहेजमीन कौर ने निभाया है।

वहीं सपना (भूमि पेडनेकर), लाला का बचपन का प्यार है। सपना इस इंतजार में है कि कब लाला की चारों बहनों की शादी हो तो वो लाला संग ब्याह रचा सके। बहनों की शादी करवाने के लिए लाला को क्या कुछ अच्छा- बुरा देखना पड़ता है, यही है फिल्म रक्षा बंधन की स्टोरी।

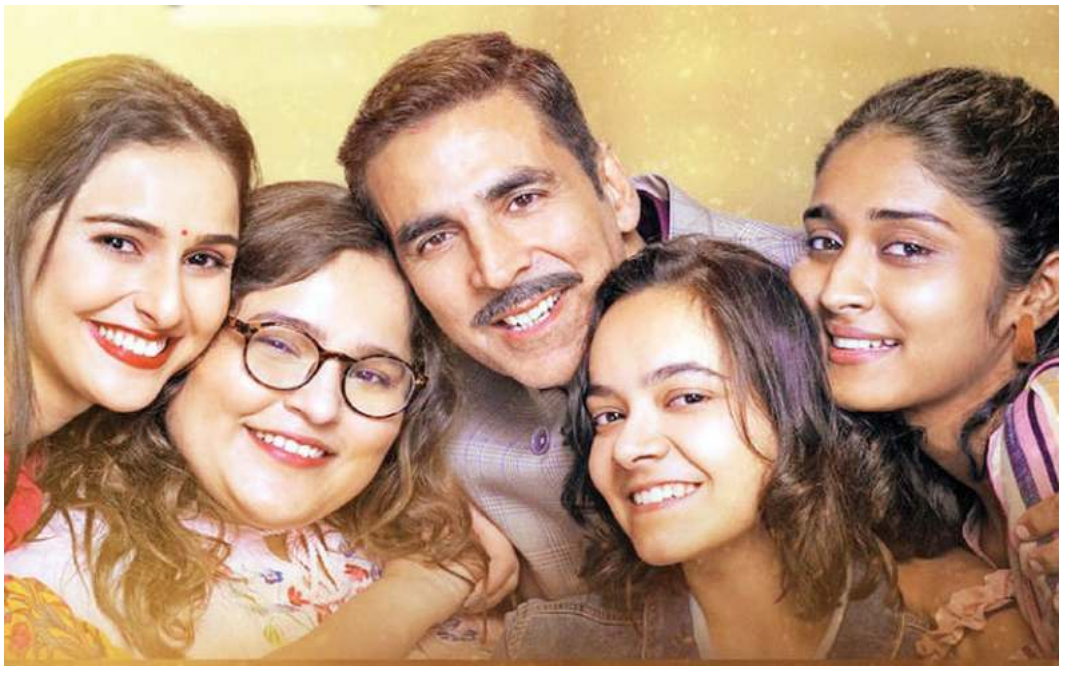

फिल्म में बेहद खूबसूरती से भाई- बहन के रिश्ते को दिखाया गया है। जहां प्यार भी है लेकिन नोंकझोंक भी है। फिल्म करीब 110 मिनट की है और कहीं पर भी ऊबाऊ नहीं लगती है। फिल्म को आप अपने परिवार के साथ देख सकते हैं। आप फिल्म को देखतें हुए हंसेंगे, रोएंगे और घर आते वक्त दहेज जैसे मुद्दे पर जरूर सोचेंगे।

क्या कुछ है खास

फिल्म की एक सबसे अच्छी बात ये है कि ये सिर्फ आपको रुलाती ही नहीं है बल्कि हंसाती भी है। फिल्म के फर्स्ट हाफ में कई फनी मूमेंट्स हैं, जबकि सेकेंड हाफ में दिल को छू जाने वाले कई सीन्स हैं। फिल्म की स्टोरी लाइन कभी सधी हुई है और बतौर दर्शक आपको बांधे रखती है। फिल्म में दहेज के मुद्दे को काफी बेहतरीन तरीके से दिखाया है कि कहीं असली कहानी उस में न खो जाए। फिल्म में कई बार आपको फ्लैशबैक्स भी देखने को मिलती हैं।

देखें या नहीं

फिल्म में बेहद खूबसूरती से भाई-बहन के रिश्ते को दिखाया गया है। जहां प्यार भी है लेकिन नोंकझोंक भी है। फिल्म करीब 110 मिनट की है और कहीं पर भी ऊबाऊ नहीं लगती है। फिल्म को आप अपने परिवार के साथ देख सकते हैं। आप फिल्म को देखतें हुए हंसेंगे, रोएंगे और घर आते वक्त दहेज जैसे मुद्दे पर जरूर सोचेंगे।

फिल्म : रक्षा बंधन
स्टार कास्ट : अक्षय कुमार, भूमि पेडनेकर, सादिया खतीब, दीपिका खन्ना, स्मृति श्रीकांत , सहेजमीन कौर और सीमा पहवा
डायरेक्टर : आनंद एल राय